कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य

सत्यपाल

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798
Qku (dk-) : +91(11) 23381428
QDI : +91(11) 23387887
पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई–मेल

kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय–सूची

भाजपा सदस्यता महा–अभियान : समीक्षा बैठक

सशक्त संगठन के लिए सघन सदस्यता अभियान जरूरी..... 6

केंद्रीय मंत्रिमंडल विस्तार..... 12

लेख

एकात्म मानववाद
– **पं. दीनदयाल उपाध्याय**..... 15

मोदी सरकार की लगातार मेहनत आम आदमी के चेहरे पर ला रही है खुशी
– **विकास आनन्द**..... 28

प्रधानमंत्री का विदेश प्रवास

'लुक ईस्ट पॉलिसी' अब 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' में तब्दील..... 19
प्रधानमंत्री की ऑस्ट्रेलिया यात्रा के दौरान संयुक्त वक्तव्य..... 20
फिजी राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ..... 22
प्रधानमंत्री ने ब्रिसबेन में महात्मा गांधी की प्रतिमा का अनावरण किया..... 23

अन्य

झारखंड और जम्मू–कश्मीर विधानसभा चुनावों पर विशेष..... 25
गणतंत्र दिवस पर मुख्य अतिथि होंगे बराक ओबामा..... 27

प्रादेशिक समाचार

पश्चिम बंगाल, मध्यप्रदेश..... 29
कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश..... 30

कमल संदेश के सभी सुधी पाठकों को विवाह पंचमी (27 नवम्बर) की हार्दिक शुभकामनाएं!

गलती का अहसास

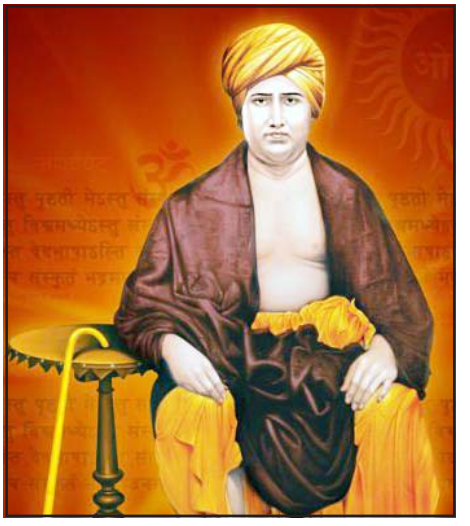

स्वामी दयानंद सरस्वती गंगा तट पर ठहरे हुऐ थे। पास ही एक गुस्सैल साधु भी रुका हुआ था। एक दिन वह स्वामी जी से नाराज हो गया। वह प्रतिदिन उनकी कुटिया के पास जाता और उन्हें गालियां देता। लेकिन स्वामी जी बुरा मानने की बजाय सुनकर मुस्करा भर देते। यह व्यवहार देखकर उनके भक्तों को बहुत आश्चर्य होता था। कई बार भक्त आवेश में आकर साधु का अनिष्ट करने की सोचते तो स्वामी जी कहते कि एक न एक दिन उसे अपनी गलती का अहसास खुद हो जाएगा।

एक बार स्वामीजी के पास किसी ने फलों से भरा एक टोकरा भेजा। स्वामीजी ने अच्छे-अच्छे फल निकाल कर उन्हें एक कपड़े में बांधा और एक भक्त से कहा-'ये फल पास की झोपड़ी में रहने वाले साधु को दे आओ।' भक्त बेमन से साधु के पास पहुंचा और बोला- 'ये फल स्वामी दयानंदजी ने आपके लिए भेजे हैं।' यह सुनते ही साधु क्रोध में आ गया, 'यह सुबह-सुबह किस निर्लज्ज का नाम ले लिया तूने। पता नहीं, आज भोजन भी मिलेगा या नहीं। जा, चला जा यहां से। ये फल मेरे लिए नहीं, किसी और के लिए होंगे। मैं तो उसे रोज गालियां सुनाता हूं।'

भक्त ने लौटकर सारा हाल बता दिया। उसकी बात सुनकर स्वामी जी बोले- 'तुम अभी उनके पास जाओ और कहो कि आप गालियां नहीं देते, अमृतवर्षा करते हैं। स्वामी जी चाहते हैं कि उनके कारण आपका जो ऊर्जा क्षय होता है, उसकी भरपाई फल खाकर करें।' भक्त ने साधु के पास जाकर वही बात दोहरा दी। स्वामी जी की बातें सुनकर साधु पर तो जैसे घड़ों पानी गिर गया। वह तुरंत स्वामी जी के पास पहुंचा और उनके पैरों पर गिर पड़ा।

संकलन : अंजु अग्निहोत्री

(नवभारत टाइम्स से साभार)

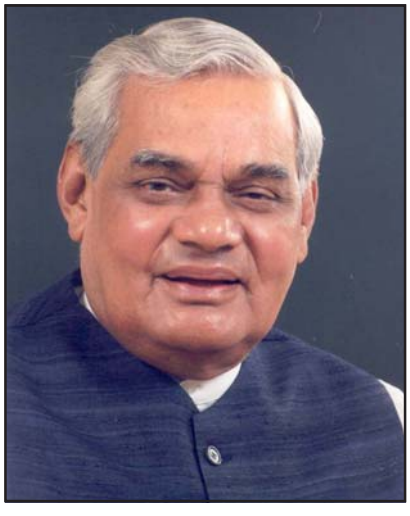

पाथेय

आज नौजवानों के सम्मुख ऐसा कोई ध्येय नहीं है जिसके लिए वे जी भर कर जिएं और आवश्यकता पड़ने पर हंसते-हंसते मर सकें। एक महान् भारत की रचना ऐसा ध्येय हो सकता है। किंतु यह लक्ष्य नौजवानों को तभी स्फूर्ति दे सकता है, जब पुरानी पीढ़ियां उसी सादगी, त्याग और परिश्रम का परिचय दें, जो उसने स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में दिखाया था।

- अटल बिहारी वाजपेयी

कानून से ऊपर कोई नहीं

बाबा या संत किसे कहा जाए? अंधविश्वास के नाम पर जिस तरह का शोषण वर्षों से किया जा रहा था, उससे लगता है कि हम अभी भी किसी अंधेरे युग में जी रहे हैं। आस्था के नाम पर आतंक का केन्द्र बन चुके इन आश्रमों की गहन जांच होनी चाहिए। मानवीय कमजोरियों का जिस तरह से रामपाल नामक ढोंगी बाबा लाभ उठा रहा था और वह हरियाणा स्थित हिसार के आश्रम में जो कुछ कर रहा था, वह सच में घोर पाप था।

'रामपाल' जैसे लोग एक दिन में पैदा नहीं होते। वे समाज के भीतर 'अंधविश्वास' की दूकान धीरे-धीरे फैलाते हैं। चमत्कार के नाम पर वे अज्ञानी और गरीब जो आर्थिक तौर पर दबे होते हैं, उनका शोषण का केन्द्र बनते हैं।

ऐसे आश्रमों पर शुरुआत में ही रोक लग जानी चाहिए। यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि दस साल से हरियाणा में कांग्रेस की हुड्डा सरकार थी। पिछले दस वर्षों में ही कथित बाबा रामपाल ने अपना साम्राज्य फैलाया। आखिर क्यों नहीं ध्यान दिया गया? वो कौन से कारण थे जो कांग्रेस की हुड्डा सरकार ऐसे बाबाओं के आश्रम को पनाह देते रहे। यह तो सभी जानते हैं कि रामपाल ने इतना बड़ा साम्राज्य एक दिन में खड़ा नहीं किया।

जूनियर इंजीनियर से बाबा बनने की कहानी क्या तत्कालीन कांग्रेस सरकार की जानकारी में नहीं आयी थी? अगर आयी थी, तो उसका विस्तार क्यों होने दिया गया? आश्रम, असलाघर में बदलता चला गया और कांग्रेस सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी रही।

पिछले दिनों बाबा के नाम पर चल रहे आश्रम ने जो हरियाणा सरकार के सामने कोहराम मचाया, वह सच में किसी देशद्रोह से कम नहीं कहा जा सकता। खुली चुनौती दी गई प्रशासन और शासन को। हरियाणा की भाजपा सरकार और स्वयं मुख्यमंत्री श्री मनोहरलाल खट्टर ने संयम से काम नहीं लिया होता तो उस आश्रम के बाहर और भीतर जो हालत पैदा कर दिए गए थे, उससे तो वहां मौत का तांडव ही पैदा होता।

छोटे-छोटे दूधमुंहे बच्चों और उनकी माताओं को जिस तरह से अपनी सुरक्षा के लिए बाबा ने ढाल बनाया, वह किसी फिल्मी माहौल से कम नहीं थी। अपनी सुरक्षा के लिए लोगों को भक्तों के नाम पर बंधक बना कर रखने वाले इस कृत्य को भला कौन अच्छा कहेगा।

इस दौरान हो सकता है कि रामपाल को गिरफ्तार करने में भले ही बारह दिन लगे हो, पर इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि शासन और प्रशासन ने जिस बुद्धिमानी और धैर्य का परिचय दिया, उसकी पूरे देश में प्रशंसा हो रही है। बिना किसी रक्तपात के इस पूरी घटना पर नियंत्रण करते हुए जिस तरह से हरियाणा की भाजपा सरकार ने एक-एक नागरिक की सुरक्षा की और उन्हें उनके घर पहुंचाया, उसकी सराहना सर्वत्र हो रही है। प्रशासन और शासन ने जिस मानवीय संवेदनशीलता का परिचय दिया, उसकी मिसाल लंबे समय तक कायम रहेगी। हरियाणा शासन ने रामपाल को गिरफ्तार कर न्यायालय की गरिमा को भी बरकरार रखा। यही कारण है कि न्यायालय ने भी शासन-प्रशासन की कार्यवाही की भूरि-भूरि प्रशंसा की। यहां शासन ने यह भी संदेश दिया कि कानून से बड़ा कोई नहीं है। ■

भाजपा सदस्यता महा-अभियान : समीक्षा बैठक

सशक्त संगठन के लिए सघन सदस्यता अभियान जरूरी : अमित शाह

भाजपा सदस्यता अभियान की राष्ट्रीय समीक्षा बैठक नई दिल्ली स्थित पार्टी मुख्यालय में 22 नवंबर 2014 को संपन्न हुई। इस बैठक में पार्टी के केंद्रीय पदाधिकारी सहित देश भर के भाजपा अध्यक्षों, प्रदेश प्रभारियों, प्रदेश सदस्यता अभियान प्रभारी एवं सह प्रभारियों ने भाग लिया। बैठक में सभी प्रदेशों का राज्यशः वृत्त निवेदन भी हुआ। इसके बाद संगठन गतिविधियों की जानकारी के लिए पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने प्रदेश के नेताओं के साथ क्षेत्रशः बैठकें कीं। गौरतलब है कि भारतीय जनता पार्टी ''सशक्त भाजपा, सशक्त भारत'' के नारे के साथ सदस्यता अभियान चला रही है। भाजपा की सदस्यता छह साल के लिए होती है। इस बार के सदस्यता अभियान की यह विशेषता है कि सदस्य बनने के पारंपरिक तरीके से साथ ऑनलाइन सदस्यता अभियान भी चलाए जा रहे हैं।

इस बैठक में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने सारगर्भित भाषण देते हुए संगठन को मजबूत बनाने के लिए सघन सदस्यता अभियान चलाने पर बल दिया। हम इस भाषण का संपादित पाठ यहां प्रकाशित कर रहे हैं:

मंच पर उपस्थित श्रीमान रामलाल जी, सदस्यता अभियान के संयोजक श्री दिनेश शर्मा जी, सभी सह-संयोजक और देशभर से आये हुए वरिष्ठ कार्यकर्ता व बंधु-भगिनी। मित्रों मैं इस नए और अभूतपूर्व महाभियान के विषय में आप सभी को कुछ कहूं, इसके पहले हमारे सभी वरिष्ठ नेताओं के महान कार्यों का स्मरण करता हूं। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, स्वर्गीय सुंदरसिंह भंडारी, राजमाता विजया राजे सिंधियां, जगन्नाथ राव जोशी, नानाजी देशमुख जैसे कईयां ने अपने त्याग और परिश्रम से इस पार्टी को मजबूत बनाया है। हमारे नेता आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी और श्री लालकृष्ण आडवाणी जैसे कितने सारे वरिष्ठों ने इस पार्टी की सफलता के लिए निरंतर मेहनत की जिसके परिणामस्वरूप आज हम यहां तक पहुंचे हैं। इस सदस्यता अभियान के माध्यम से हमें हमारे वरिष्ठ नेताओं के किये काम को और आगे बढ़ाना है।

सदस्यता अभियान श्री नरेन्द्र मोदी जी के हाथों से शुरू होने के बाद आज सुबह तक करीब 79 लाख ऑन लाइन सदस्य बन चुके हैं और इस अभियान को आगे बढ़ाने के लिए, इसकी समीक्षा के लिए, कुछ तकनीकी व्यवहारिक जो दिक्कते लोगों के सामने आई है उनके निवारण के लिए और अन्य फैसलों के लिए यहां बैठक रखी गई है। मित्रों, यह सदस्यता अभियान भारतीय जनता पार्टी के लिए कोई नई चीज नहीं है। हर बार हम संगठन पर्व के पहले सदस्यता अभियान करते हैं और हर 6 साल में प्रत्येक सदस्य फिर से सदस्य बनते हैं, चुनाव भी होता है यह हमारी परंपरा है। करीब-करीब 1300 पार्टियों में कुछ एक-दो पार्टियां है, जिनमें से हमारी पार्टी प्रमुख है जिनमें आज भी आंतरिक लोकतंत्र बरकरार है, लोगों को जुड़ने की व्यवस्था है। जुड़ने के बाद संगठन में, चुनाव के माध्यम से विभिन्न पदों पर पहुंचने की व्यवस्था है और इस मंच का उपयोग कर देश का कोई भी नागरिक देश की सेवा करने के लिए आगे आ सकता है। और यही शायद एक पार्टी होगी, जिसका एक संविधान है, जिसका अनुसरण करते हुए हमारी संगठनात्मक चुनाव की प्रक्रिया चलती है। हर दो

साल पर हम संगठन का चुनाव करते हैं, हर 6 साल में हमारी सदस्यता का नवीकरण होता है। और यह 2014-15 का साल हमारी सदस्यता का नवीनीकरण का साल है। और एक मायने में हमने इसे एक अलग तरीके से लेकर इस सदस्यता अभियान को रूटीन सदस्यता अभियान ना मानते हुए इसको पार्टी के जनाधार का विस्तार करने के लिए, संगठन की मजबूती के लिए और विचारधारा के प्रचार-प्रसार के लिए- इन तीनों के लिए हम इस सदस्यता अभियान का उपयोग कर पार्टी को एक नई उंचाई तक ले जाना चाहते हैं। 1951 से हमारी पार्टी, पहले जनसंघ फिर भारतीय जनता पार्टी, हम निरंतर काम करते रहे। एक विचारधारा के आधार पर ही हमारी पार्टी का अस्तित्व आया, हम आगे बढ़े। शुरू-शुरू में विचारधारा का मजाक भी उड़ा, विचारधारा को संघर्ष भी करना पड़ा, इसकी स्वीकृति भी आई और अब 2014 के लोकसभा चुनाव के बाद इस विचारधारा को सम्मान मिलना शुरू हुआ है। देश और दुनिया में हमारी विचारधारा, हमारी पार्टी की सम्माननीय स्थिति प्राप्त होने की शुरूआत मान लीजिए 2014 से हुई। 2014 तक हम कई बार सत्ता में आए, राज्यों में आए, केन्द्र में आए। मगर पूर्ण रूप से भारत की जनता ने पूर्ण बहुमत के साथ पहली बार नरेन्द्रभाई के नेतृत्व में 2014 में हमें सत्ता दी है और यह एक तरह से हमारी विचारधारा की स्वी.ति है। और जो स्वीकृति, जो सम्मान हमें मिला है उसे बहुत आगे तक ले जाना चाहते हैं।

इस सदस्यता अभियान के माध्यम से देश के कई हिस्से ऐसे हैं, जहां आज भारतीय जनता पार्टी पहुंची नहीं है। वहां पर भारतीय जनता पार्टी को पहुंचाना है। कई राज्य ऐसे होंगे, जहां भारतीय जनता पार्टी की सरकारें बनी हैं। मगर राज्यों में कई इलाके ऐसे होंगे, जहां भारतीय जनता पार्टी नहीं पहुंची है। वहां भारतीय जनता पार्टी को पहुंचाना है। कई जगह हम विधानसभा की सीट जीत गए, लोकसभा की सीट जीत गए, कुछ बूथ ऐसे होंगे जहां भारतीय जनता पार्टी नहीं पहुंची है उस बूथ तक भारतीय जनता पार्टी को पहुंचाने के लिए यह सदस्यता अभियान है। अभी तक आप लोगों के सामने जो बातें रखी गई हैं, उससे ऐसा मत सोचिए कि फोन नं. डायल कर देंगे, सदस्य बन जाएंगे और बाद में इसका रजिस्टर बन जाएगा, संगठनात्मक चुनाव हो जाएंगे और यह डाटा पार्टी के साथ खड़ा हो जायगा। इसके बाद एक व्यवस्था पार्टी ने सोची है। जितने भी सदस्य बनेंगे उनको सूचीबद्ध करने के बाद लगभग 2 महीने का नए सदस्यों का अभियान भारतीय जनता पार्टी चलाने वाली है। हर नए सदस्य के पास हमारे कार्यकर्ता जाएंगे। पार्टी का एक परिचय पत्रक देंगे, पार्टी का परिचय देंगे, उनका पार्टी में स्वागत करेंगे और उनको पार्टी की गतिविधियों से जोड़ने का प्रयास करेंगे। इस तरह से बड़ी संख्या में मान लीजिए, 10 करोड़ सदस्य बनते है तो 10 करोड़ लोगों में से 7 करोड़ लोगों का एक संपर्क अभियान भारतीय जनता पार्टी इसके बाद 2 महीने तक चलाने वाली है। तो अप्रैल और मई हम इस सम्पर्क अभियान को नीचे तक लेकर जाएंगे और प्रयास करेंगे 3 करोड़ पुराने सदस्य, 7 करोड़ नए सदस्यों को भारतीय जनता पार्टी के साथ जोड़े और भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा को वो जाने और भारतीय जनता पार्टी का एक अभिन्न अंग बने। इसके लिए एक भगीरथ पुरूषार्थ भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं को आने वाले दिनों में करना है। और उसके बाद में 6, 7 और 8 ये तीन महीने लगभग चुने हुए 15 लाख सदस्यों का अभ्यास वर्ग, उनका प्रशिक्षण कार्यक्रम और मैं मानता हूं कि दुनियाभर की राजनीतिक पार्टियों के इतिहास में सबसे बड़ा और सबसे लंबा प्रशिक्षण कार्यक्रम की एक योजना भारतीय जनता पार्टी इस साल बनाना चाहती है और इन तीन महिनों के अंदर अलग-अलग स्तर के अभ्यास वर्गों के माध्यम से ये 15 लाख चुने हुए कार्यकर्ता, जिसमें नए भी होंगे, पुराने भी होंगे, विशिष्ट लोग भी होंगे, इन सबका एक अभ्यास वर्ग करके भारतीय जनता पार्टी की आत्मा के साथ इनका जुड़ाव करने का कार्यक्रम भारतीय जनता पार्टी ने सोचा हुआ है।

इस सदस्यता अभियान के माध्यम से देश के कई हिस्से ऐसे हैं, जहां आज भारतीय जनता पार्टी पहुंची नहीं है। वहां पर भारतीय जनता पार्टी को पहुंचाना है। कई राज्य ऐसे होंगे, जहां भारतीय जनता पार्टी की सरकारें बनी हैं। मगर राज्यों में कई इलाके ऐसे होंगे, जहां भारतीय जनता पार्टी नहीं पहुंची है, वहां भारतीय जनता पार्टी को पहुंचाना है।

हमारी विचारधारा, हमारे कार्य करने का कारण, अब तक का पार्टी का इतिहास, पार्टी के नेताओं का परिचय, पार्टी का देश की राजनीति में योगदान, पार्टी का देश के विकास में योगदान, और हमारी सरकारों का काम- इन सबको समायोजित करके एक प्रशिक्षण

की 'कैप्सयूल' बनाई जाएगी और इन 15 लाख कार्यकर्ताओं को हम तीन महीने के अंदर प्रशिक्षित करने का एक विराट प्रशिक्षण कार्यक्रम भी बनाया है।

तो मित्रों, मेरा इतना ही कहना है कि ये जो सदस्यता अभियान है उसको यदि गति देनी है तो यदि यहां इस हॉल में बैठे हुए लोग एक बार ठान ले तो यह सदस्यता अभियान बूथ तक सफलतापूर्वक पहुंच सकता है। यह सदस्यता अभियान यदि बूथ तक नहीं पहुंचता है तो मैं मानता हूं कि जितना फायदा पार्टी को सदस्यों को जोड़ने का होना चाहिए उतना नहीं होगा। क्योंकि एकरूपी विकास होना चाहिए। हर बूथ तक नए सदस्य बनाने की एक वैज्ञानिक व्यवस्था अपने राज्यों में जाकर विकसित करनी होगी और उसकी कठोर निगरानी करते हुए नीचे तक पहुंचाना होगा। तब जाकर बूथ से नए सदस्य बनने का लक्ष्य हम सिद्ध कर पाएंगे। बूथ की जाति की रचना, बूथ की राजनीतिक व्यवस्था, परिस्थिति और बूथ में हम जो परिवर्तन लाना चाहते हैं इसका भी विवरण, जहां अच्छा काम है, भारतीय जनता पार्टी को वहां पर करना चाहिए। हो सकता है हर जगह पर न हो मगर कुछ तो जगह ऐसी है, जहां भारतीय जनता पार्टी आज मजबूत है। मान लीजिए मध्यप्रदेश में हमारा सालों पुराना संगठन है और संगठन आज अपनी ऊंचाइयों पर है, गुजरात, राजस्थान ऐसे कई राज्य है, जहां संगठन बहुत अच्छा है। तो ढिलाई न करते हुए ज्यादा से ज्यादा विवरण प्राप्त करके हर बूथ को कैसे जीवंत बूथ बनाया जाए, हर बूथ के हर वर्ग का प्रतिनिधित्व कैसे इस सदस्यता अभियान में हो इसकी योजना हो। आप देख लीजिए कुछ जगह हमारी सदस्यता काफी कम है; वनवासी क्षेत्र में हमारी सदस्यता कम है; शहरों की झुग्गी-झोपड़ियों में हमारी सदस्यता कम है; दलित बस्तियां, हमारी सदस्यता कम है। तो हम जहां आज तक नहीं पहुंच पाए वहां 2014 का साल भारतीय जनता पार्टी का झंडा गाड़ने का साल है, वहां पर भारतीय जनता पार्टी को पहुंचाने का साल है। इसलिए जहां पर पार्टी मजबूत है, जहां पर हमारा संगठन ठीक है वहां पर इसका विस्तृत योजना संगठन के कार्यकर्ता करेंगे। एक प्रदेश की टोली बने। इस काम को मन बनाकर काम करने वाली। और प्रदेश की टोली जिलों में इस प्रकार की टोलियों की रचना करके अंत तक बूथ तक इस भावना को पहुंचाए, अंत में बूथ तक इस उत्साह को पहुंचाए, यह बहुत जरूरी है। वरना इस सदस्यता अभियान में 10 करोड़ सदस्य तो बन जाएंगे, क्योंकि आज नरेन्द्रभाई की जिस तरह की लोकप्रियता है और भारतीय जनता पार्टी का जिस तरह का जनाधार है उसमें सदस्य बनाना बहुत बड़ी बात नहीं है। परन्तु यदि हम नरेन्द्रभाई की लोकप्रियता, भारतीय जनता पार्टी की सरकार के अच्छे काम और बढ़े हुए जनाधार को स्थायित्व देना चाहते हैं तो बूथ से लेकर राज्य तक पूरी ईकाई सर्वांगीण रूप से बढ़नी चाहिए और संपूर्ण और स्थाई विकास होना चाहिए। यह तभी हो सकता है जब कि आप राज्यों में जाकर इसकी विस्तृत योजना बनायें। इसका विवरण आपको समझाने की कोई आवश्यकता नहीं है। यहां उपस्थित कार्यकर्ताओं के लिए यह कोई नई बात नहीं है। मगर इस बार 2014 के चुनाव ने जो परिणाम दिए हैं, उसके बाद राज्यों के चुनाव ने जो परिणाम दिए है इस जनाधार का उपयोग करके हम भारतीय जनता पार्टी को आने वाले 50 साल तक एक मजबूत पार्टी बनाकर देश के सामने रखें और हमारे संगठन का आधार बढ़ा दे, इसलिए हमें इस संगठन के पर्व 'सदस्यता अभियान' का उपयोग करना चाहिए। आप मेरी बात मानकर

चलिएगा कि जिस तरह से 1947 से 1966 तक कांग्रेस का एक समय आया था कि कांग्रेस जिसको भी चुनाव में खड़ा करती वह जीत जाता था और चुनाव में लोकसभा सदस्य तय नहीं करना होता था, चुनाव में बस यही देखना होता था कि कांग्रेस का प्रत्याशी कौन है वह चुनाव जीतता था। आने वाले दिनों में भारतीय जनता पार्टी को भी इतना विराट जन-समर्थन मिलने वाला है। हमें याद रखना चाहिए कि 66 के बाद कांग्रेस की टूटने की शुरूआत हुई। क्योंकि उन्होंने संगठन के नवीनीकरण को महत्व नहीं दिया। वो सरकार की गतिविधियों में पड़ गए। नेता बनाने की गतिविधियों में पड़ गए। नेताओं के अंदर जातियों के जोड़-तोड़ में पड़ गए। संगठन के आधार को कांग्रेस ने, जो आजादी के समय नीचे तक 25 पैसे का सदस्य बनाकर पहुंचाया था वो आधार धीरे-धीरे क्षीण होता गया और 1966 से कांग्रेस के पतन की शुरूआत हुई। 2014 आते-आते उनका नेता-विपक्ष का पद भी चला गया। अब जबकि हमारा अच्छा समय शुरू हो रहा है हमें इतिहास से सीखना चाहिए और आने वाले दिनों में यह अच्छा समय लंबा चले और चिरंजीवी हो उसके लिए संगठन को और हमारे विचार को नीचे तक पहुंचाने के लिए यह सदस्यता अभियान है। मेरी बात को आप अतिश्योक्ति मत मानिए, आपको भी इस बैठक में बुलाया गया है, आप आए हैं आप पर एक निश्चित जिम्मेदारी है इसलिए आप आए है, मगर यह सदस्यता अभियान जो होने जा रहा है आप मान लीजिए देश के लोकतांत्रिक इतिहास का दांडी मार्च है। गांधी जी के साथ जब साबरमती आश्रम से 85 लोग निकले थे और दांडी यात्रा शुरू हुई थी उस वक्त उनको मालूम नहीं था कि वो इतिहास का सृजन करने जा रहे हैं। आज आप लोग बिल्कुल उसी तरह से यहां बैठे है, भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता के रूप में यहां बैठे है। मेरी बात मानकर चलिएगा आप भी देश के लोकतांत्रिक इतिहास का एक बड़ा हिस्सा बनने जा रहे हैं, यह अभियान इतना महत्वपूर्ण और परिणामदायक होने वाला है। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि इस अभियान को हर व्यक्ति हर स्थान पर नए-नए विचार से नए आयाम दे, हम नए-नए तरीकों से इस अभियान को गति दें, हम नई-नई चीजों को लाकर इस अभियान से जुड़े कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाएं और इस अभियान को पूर्ण रूप से भारतीय जनता पार्टी की ताकत बढ़ाने का अभियान बनायें। मैं मानता हूं कि यह अभियान भारतीय जनता पार्टी का इस साल का, जब हमारी राष्ट्रीय परिषद हुई, तब भी मैंने कहा था कि भारतीय जनता पार्टी के विस्तार का वर्ष है। भारतीय जनता पार्टी के विचार को आकार देने का वर्ष है और भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा के प्रचार-प्रसार का वर्ष है। और इसका उपयोग हमें इस सदस्यता अभियान के माध्यम से करना चाहिए। इस बार भारतीय जनता पार्टी ने फैसला किया है कि सक्रिय सदस्यों की संख्या जो लगभग साढ़े पांच से छः लाख थी क्योंकि दो राज्यों के आंकड़े यहां उपलब्ध नहीं हैं, करीब-करीब छः लाख थी। तो इस बार हम 50 प्रतिशत बढ़ोतरी करना चाहते हैं। मान लीजिए हर राज्य में 100 सक्रिय सदस्य है तो उनको 150 बनाना है, 50 प्रतिशत की वृद्धि करना चाहते हैं। 6 लाख सक्रिय सदस्य देशभर में होंगे तो इस बार हम 9 लाख सक्रिय सदस्य देशभर में बनाना चाहेंगे। और सक्रिय सदस्य की पात्रता में कुछ फेरबदल किया है। हर सक्रिय सदस्य ने 100 सामान्य सदस्य बनाने हैं। पहले 50 सामान्य सदस्य बनाने का हमारे यहां प्रावधान था, इस बार 100 बनाने हैं। तो आप समझ लीजिए 9 लाख सक्रिय सदस्य 100-100 सदस्य अब से बनाते हैं तो 9 करोड़ सदस्य वैसे ही बन जाएंगे। और जो बनाएगा वही सक्रिय सदस्य बन पाएगा, उसको 100 सदस्यों की सूची देनी होगी।

उसी संबंध में एक पत्रक बनाया जो आपको दिया गया है, जिसमें सक्रिय सदस्य का नाम, मंडल, जिला प्रदेश, मो. नंबर, जो प्रस्तावित सदस्य है उसे

इस बार हम 50 प्रतिशत बढ़ोतरी करना चाहते हैं। मान लीजिए हर राज्य में 100 सक्रिय सदस्य है तो उनको 150 बनाना है, 50 प्रतिशत की वृद्धि करना चाहते हैं। 6 लाख सक्रिय सदस्य देशभर में होंगे तो इस बार हम 9 लाख सक्रिय सदस्य देशभर में बनाना चाहेंगे। और सक्रिय सदस्य की पात्रता में कुछ फेरबदल किया है। हर सक्रिय सदस्य ने 100 सामान्य सदस्य बनाने हैं। पहले 50 सामान्य सदस्य बनाने का हमारे यहां प्रावधान था, इस बार 100 बनाने हैं। तो आप समझ लीजिए 9 लाख सक्रिय सदस्य 100-100 सदस्य अब से बनाते हैं तो 9 करोड़ सदस्य वैसे ही बन जाएंगे। और जो बनाएगा वही सक्रिय सदस्य बन पाएगा, उसको 100 सदस्यों की सूची देनी होगी।

लिखना है। इसका मतलब जो सक्रिय सदस्य प्राथमिक सदस्य बनाने जा रहा है, उसके सामने बैठकर टोल फ्री नम्बर डायना करवाना पड़ेगा। उसके बाद सामने से उसका सक्रिय सदस्य नम्बर आएगा। वो आपने यहां नोट करना है उसके बाद उसका पता, टेलि. नम्बर, पिन कोड एसएमएस कराकर वहां से बाहर निकलना है। एक परिवार में एक से ज्यादा भी बना सकते है। मगर ये 100 सदस्यों का जिसके पास दो पर्चे भरकर दिए होंगे वो ही भारतीय जनता पार्टी का सक्रिय सदस्य बन पाएगा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से लेकर बूथ के

कार्यकर्ता तक यह व्यवस्था कड़ाई से लागू करने का भारतीय जनता पार्टी ने मन बना लिया है। आप 100 सदस्य बनाइए, 9 लाख सदस्य भारतीय जनता पार्टी के नए 100 प्राथमिक सदस्य बनाएं और 100 सदस्यों की सूची भारतीय जनता पार्टी के कार्यालय में दें। भारतीय जनता पार्टी इसको सत्यापित करेगी क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक नंबर है इसके साथ स्वत: प्रमाणित हो जाएगा और आप सक्रिय सदस्य बन जाएंगे।

सक्रिय सदस्य बनाने के मानदंड पहले था कि पार्टी की ओर से 10 दिन पार्टी के कार्य में कहीं न कहीं देने थे, उसमें हम थोड़ी कमी कर रहे हैं। 10 दिन की जगह हम 7 दिन ही रखते हैं। मगर थोड़ा बदलाव भी कर रहे हैं कि 7 दिन सदस्यता अभियान के लिए पूर्ण समय देना होगा और पार्टी की योजना से देना होगा तभी जाकर आप सक्रिय सदस्य बन सकते हैं। जिसको सक्रिय सदस्य बनना है उसको कोई मोहल्ला, कोई झुग्गी-झोपड़ी, कोई दलित बस्ती, कोई गांव जहां भारतीय जनता पार्टी का सदस्य नहीं है, कोई ब्लॉक जहां भारतीय जनता पार्टी का सदस्य नहीं है, भारतीय जनता पार्टी उसको आवंटित करेगी और वहां जाकर 7 दिन सदस्यता के लिए वो काम करके जब रिपोर्ट देंगे, उसका सत्यापन होगा और बाद में वो सक्रिय सदस्य के रूप में शामिल होंगे। जिसको भारतीय जनता पार्टी का सक्रिय सदस्य बनना है उसको 7 दिन देना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है और ये सात दिन दो साल में देने हैं। और कठोरता से नीचे तक हमें इस बात को ले जाना होगा और आप समझिएगा, कोई ढिलाई मत कीजिएगा। यह हम पर निर्भर करता है कि हम इस चीज को इसी भावना से नीचे तक ले जाएं। इसी भावना से उसका क्रियान्वयन करें और इसी भावना से परिणाम पाएं। जो प्रदेश, जिलास्तर के लोग है वो बैठक लेने जाएंगे, वो 7 दिन में गिन लिया जाएगा। मान लीजिए मुरलीधर राव जी हैं, 3 दिन तमिलनाडू गए सदस्यता अभियान में लोगों का उत्साह बढ़ाने के लिए तो वो 3 दिन गिन लिए जाएंगे। मगर जो नीचे के कार्यकर्ता हैं, मंडल स्तर के हैं, जिला स्तर के हैं उनका आवंटित जगह पर प्रवास होगा तभी वो सक्रिय सदस्य बन पाएंगे और 100 प्राथमिक सदस्य बनाने होंगे तभी सक्रिय सदस्य बन पाएंगे। और ये दोनों मानदंड पूरा करने वाले 9 लाख सक्रिय सदस्य भारतीय जनता पार्टी ने इस बार बनाने है। तो मैं मानता हूं कि बहुत बड़ा लक्ष्य नहीं है। पार्टी का आधार, आकार, बदलना हम लोगों पर निर्भर करता है। इससे अच्छी राजनीतिक स्थिति, राजनीतिक नेतृत्व, राजनीतिक स्वीकार्यता कभी नहीं आएगा। इस मौके का पार्टी को उपयोग कर लेना चाहिए। इस मौके को भुनाना चाहिए। इस जनाधार को स्थायित्व देना चाहिए। और स्थायित्व दिए गए जनाधार में से छांटकर विचारधारा को समर्पित और कुछ कार्यकर्ता निकालना है जो लंबे अर्से तक, 15-20-25 साल तक भारतीय जनता पार्टी का काम बढ़ाएं। इस दिशा में सदस्यता अभियान का काम करना चाहिए।

मगर मित्रों, इस अभियान को जरा भी हल्के में ना ले। कई बार राजनीति में काम करते-करते हम लोगों के जीवन में स्थिरता आ जाती है। कुछ फैसले ऐसे होते हैं जो हमारे अनुकूल नहीं होते। कई बार हमारी स्थिति भी हमें ठीक नहीं लगती। इन सब चीजों के कारण जो अवसाद, निष्क्रियता, स्थिरता पैदा होती है, उसको मेहरबानी करके ये तीन महीने मन से उखाड़कर फेंक दीजिए। क्योंकि ये तीन महीने ऐसे है कि अगर इन तीन महीनों में एक टोली काम करती है तो मैं मानता हूं कि नीचे तक ये 10 करोड़ सदस्यों का लक्ष्य पूर्ण हो सकेगा। ऐसा नहीं है कि यहां बैठे हुए लोगों को पार्टी ने आज तक जीवन में कुछ नहीं दिया।

हो सकता है आज मेरी स्थिति है उससे मुझे संतोष न हो, मगर कभी तो कुछ दिया है। तो कभी कुछ दिया है तो इसके लिए जीवन के ये तीन महीने पार्टी के लिए लगा दीजिए और भारतीय जनता पार्टी को सफल बनाइए। मन में से हर विचार निकाल दीजिए जो आपको सक्रिय बनने से रोके और इस भावना को खोए बगैर बूथ तक पहुंचाने का काम यहां बैठी टोली का है।

मित्रों, भारतीय जनता पार्टी का जो भविष्य है वो बड़ा उज्जवल है। मोदीजी का जो नेतृत्व है उसकी विश्वभर, देशभर में स्वी.ति मिली है। उनकी योजनाएं जो लोकाभिमुख है और योजनाओं के परिणाम जिस तरह से मिल रहे हैं, मैं मानता हूं कि आने वाला हमारा भविष्य बहुत सुनहरा है। मगर मैं चाहता हूं कि उस सुनहरे भविष्य को भुनाकर पार्टी का आधार इतना मजबूत कर दें, ऐसे कार्यकर्ताओं की निर्मिति करें जो हमारी विचारधारा को किसी भी निर्बल समय यदि पार्टी का आ जाए, हमारा कार्यकर्ता, हमारी विचारधारा अक्षुण्ण रहे। जनसंघ जब बना उसके बाद कई ऐसे मौके आए। आपातकाल से लेकर दो सीट तक का समय आया। उसके बाद कई ऐसे मौके आए जब कार्यकर्ताओं के मन में निराशा आई। मगर जनसंघ कार्यकर्ताओं का वैचारिक आधार स्पष्ट था इसलिए पार्टी संकट से धीरे-धीरे बाहर निकल गई और हम इस मंजिल तक पहुंचे है। अगर नई बढ़ती हुई पार्टी का नए बनते हुए सदस्यों, बाहर से आते हुए लोगों की वैचारिक स्पष्टता हम ठीक नहीं करेंगे, इस सदस्यता अभियान को हम ठीक से नहीं चला पाएंगे तो संकट के समय में हमारी पार्टी ठीक नहीं रह पाएगी। इसको एक सामान्य रूटीन संगठन पर्व का महज एक

यह सदस्यता महाभियान एक नई संगठन-आधारित राजनीति का शिलान्यास है। हमें इस ऐतिहासिक प्रयास को सफल बनाना है।

अभियान मत समझिए। बहुत सोच-समझ, विचार कर बहुत विस्तृत योजना के साथ इसकी रूपरेखा तैयार की गई है। और मैं आपको बता भी नहीं सकता जो मैं देख सकता हूं उसको शब्दों में ढाल नहीं सकता। इसके इतने अच्छे परिणाम भारतीय जनता पार्टी को मिलने वाले हैं कि हम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। और अगर श्री नरेन्द्र मोदी जी के इस पुरूषार्थ को, उनकी लोकप्रियता को, हमारा इतना संगठनात्मक सहयोग मिल जाएगा तो मैं मानता हूं, कश्मीर से कन्याकुमारी और असम से गुजरात तक पूरा हिन्दुस्तान एक छत्र कमल के निशान पर अच्छा दिन हमको देखने को मिलेगा। और केवल सत्ता नहीं, हमारे जो सिद्धांत है, हमारी विचारधारा है उसको युवाओं तक पहुचांना, आने वाली पीढ़ी तक पहुंचाना और नया भारत जो बनेगा आने वाले 15-20 सालों में वो हमारे मूल विचारों के आधार पर बने, हमारे सिद्धांतों के आधार पर बने और देश का विकास भी हमारे सिद्धांतों को कमजोर किये बगैर हो। यह अगर हमें करना है तो इस अभियान में आप लोगों का सहयोग बहुत जरूरी है। यहां मंच पर बैठे हुए सभी लोग, सभी राष्ट्रीय पदाधिकारी, सभी भारत सरकार के मंत्री, सभी लोग पसीना बहाने वाले हैं। आप मेरा भरोसा कीजिएगा कोई नहीं छूटेगा। मगर हम नीचे तक कार्यकर्ता को प्रेरित करे, भाषण से नहीं अपने काम से प्रेरित करे। अपनी योजना से उसके काम की व्यवस्था बनाइए और अपनी निगरानी से उसके आलस को निकाल दें तो मैं मानता हूं कि यह अभियान निश्चित सफल होगा। कल्पना कीजिएगा कि हिन्दुस्तान की एक पार्टी देश का, दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बनती है और इतने मजबूत आधार पर बनती है तो भारतीय जनता पार्टी का, मोदी जी का गौरव पूरी दुनिया में एक साथ इतना बढ़ेगा कि हम गौरव से कह पाएंगे कि हम भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता है। और इसी दृष्टि से हमें पार्टी को आगे ले जाना चाहिए। मैं ज्यादा कुछ नहीं कहना चाहता मित्रों, मगर सक्रिय सदस्य बनाने के लिए जो मानदंड है इसको कृपया प्रांत में कमजोर मत कीजिएगा और वो अगर एक बार नीचे तक पहुंच जाएगा तो हमारा लक्ष्य निश्चत पूरा हो जाएगा। 100 सदस्य बनाना और 7 दिन देना दोनों मानदंड को अगर आप नीचे तक ऐसे पहुंचाते हैं तो मुझे लगता है कि सब ठीक हो जाएगा मैं आप लोगों से अपेक्षा करता हूं और बड़े विनम्र भाव से प्रार्थना करता हूं कि ये तीन महीने भारतीय जनता पार्टी के लिए लगा दीजिए। सालों तक भारतीय जनता पार्टी एक मजबूत आधार पर खड़ी रहेगी और लंबे अर्से तक अपने हजारों-हजार कार्यकर्ताओं को देश का और राज्यों की सेवा करने का मौका देती रहेगी।

मैं पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं को बताना चाहूंगा कि यह सदस्यता महाभियान एक नई संगठन-आधारित राजनीति का शिलान्यास है। हमें इस ऐतिहासिक प्रयास को सफल बनाना है। यह हमारी अपनी खुद की सक्रियता के आधार पर ही सफल हो पाएगा। हम में से प्रत्येक को इस जिम्मेदारी को अपने ऊपर लेना पड़ेगा। यह कार्य हम सभी की संपूर्ण सहभागिता से ही आगे बढ़ेगा। ■

केंद्रीय मंत्रिमंडल विस्तार

4 कैबिनेट और 17 बने राज्य मंत्री

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 21 मंत्रियों को शामिल करते हुए 9 नवंबर को अपनी मंत्रिमंडल का विस्तार किया, जिसमें से चार ने केन्द्रीय मंत्री, तीन ने राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और 14 ने राज्य मंत्री के रूप में शपथ ली। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पांच माह पुरानी अपनी सरकार के पहले विस्तार में योग्यता को वरीयता दी है। इसमें देश के सभी क्षेत्रों का ध्यान रखा गया है। गोवा के पूर्व मुख्यमंत्री श्री मनोहर परिंकर को रक्षा मंत्रालय का पदभार सौंपा गया, जो इस पद के सर्वथा योग्य हैं। श्री परिंकर में कड़े फैसले लेने की क्षमता है। श्री सुरेश प्रभु वाजपेयी सरकार में मंत्री रह चुके हैं और कुशल प्रशासक हैं। उन्हें रेल मंत्रालय जैसा महत्वपूर्ण मंत्रालय दिया गया है। श्री जगत प्रकाश नड्डा, जिन्होंने हिमाचल प्रदेश सरकार में स्वास्थ्य मंत्री के नाते यशस्वी कार्य किया था, उन्हें केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री का दायित्व सौंपा गया है। चौधरी बीरेंद्र सिंह को केंद्रीय ग्रामीण विकास, पंचायती राज एवं पेयजल और स्वच्छता मंत्री बनाया गया है। मंत्रिमंडल में हुए विस्तार में श्री मोदी ने अनुभवी राजनेताओं सहित पहली बार सासंद बने प्रतिभाशाली युवाओं को भी अवसर देने का प्रयोग किया गया, जो सराहनीय है। शपथ लेने वाले मंत्रियों की सूची इस प्रकार है -

केन्द्रीय मंत्री

मनोहर परिंकर: गोवा के पूर्व मुख्यमंत्री। आईआईटी इंजीनियर श्री परिंकर सुशासन के लिए जाने जाते हैं।

सुरेश प्रभु: वाजपेयी सरकार में केन्द्रीय बिजली मंत्री थे। नदियों को जोड़ने वाली कमेटी के अध्यक्ष रहे हैं।

जगत प्रकाश नड्डा : हिमाचल से राज्यसभा के सदस्य। हिमाचल प्रदेश सरकार में स्वास्थ्य मंत्री रहे हैं। भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री हैं।

चौधरी बीरेन्द्र सिंह: मूलत: हरियाणा से श्री सिंह हाल ही कांग्रेस से भाजपा में शामिल हुए हैं।

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

बंडारू दत्तात्रेय: वाजपेयी सरकार में मंत्री रहे। कई समितियों के अध्यक्ष भी रहे।

राजीव प्रताप रूडी: साल 1996 में पहली बार लोकसभा पहुंचे। वाजपेयी सरकार में मंत्री रहे। बिहार के सारण से सांसद हैं। लोकसभा चुनाव में राबड़ी देवी को हराया था।

महेश शर्मा : 2012 में उत्तर प्रदेश में विधानसभा के लिए चुने गए। गौतमबुद्ध नगर से भाजपा के सांसद हैं। महेश शर्मा पेशे से डॉक्टर हैं।

राज्य मंत्री

मुख्तार अब्बास नकवी: राज्यसभा से सांसद हैं। पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी हैं। श्री नकवी, वाजपेयी सरकार में भी मंत्री रहे हैं।

राम कृपाल यादव: 12 मार्च 2014 को राजद छोड़कर भाजपा के सदस्य बने। श्री लालू यादव की बेटी मीसा भारती को लोकसभा चुनाव में हराया। पहली बार मंत्री बने।

हरिभाई पाटिलीभाई चौधरी: गुजरात भाजपा के वनसकांडा से भाजपा के सांसद हैं।

सांवर लाल जाट: राजस्थान में कैबिनेट मंत्री रहे। अजमेर से सचिन पायलट को हराकर भाजपा के सांसद हैं। सियासत में आने से पहले प्रोफेसर थे।

मोहन कुंडारिया: गुजरात के तानकर से भाजपा के सांसद हैं। 2007-2012 में तानकर से विधायक रहे हैं।

गिरिराज सिंह: नवादा से भाजपा के सांसद हैं। बिहार में नीतीश सरकार में मंत्री रहे।

हंसराज अहीर: महाराष्ट्र के विदर्भ से भाजपा सांसद। कोयला घोटाले का मामला उठाने के लिए जाने जाते हैं।14वीं लोकसभा में सोमनाथ चटर्जी ने सांसदों के लिए 'आदर्श' करार दिया था। संसद की कई समितियों के सदस्य रहे हैं।

रामशंकर कठेरिया: आगरा (उत्तर प्रदेश) से दूसरी बार लोकसभा पहुंचे। श्री कठेरिया पंजाब में भाजपा के पार्टी प्रभारी हैं। पीएचडी की ड़िग्री रखने वाले कठेरिया कई किताबें लिख चुके हैं।

वाईएस चौधरी: आंध्र प्रदेश के बड़े उद्योगपति हैं। राज्यसभा से सांसद और टीडीपी के सदस्य। इंजीनियरिंग में पोस्टग्रेजुएट।

जयंत सिन्हा: हजारीबाग से भाजपा के सांसद हैं। आईआईटी दिल्ली से बीटेक और हॉवर्ड से एमबीए। लोक लेखा समिति, वित्त संबंधी स्थाई समिति तथा अधीनस्थ विधान संबंधी समिति के सदस्य रहे हैं। निवेश कोष प्रबंधक, प्रबंधन

कंसलटेंट के पद पर काम कर चुके हैं।

राज्यवर्धन सिंह राठौड़: सेना की नौकरी छोड़कर राजनीति में आए। 2004 एथेंस ओलंपिक में रजत पदक जीता। जयपुर ग्रामीण से कांग्रेस के सीपी जोशी को हराया और लोकसभा पहुंचे।

बाबुल सुप्रियो: पहली बार लोकसभा के लिए चुने गए हैं। इसी साल भाजपा में चुनावों से पहले शामिल हुए थे। आसनसोल से भाजपा के एकमात्र सांसद हैं। सुप्रियो गायक हैं।

साध्वी निरंजन ज्योति: पहली बार लोकसभा में पहुंची हैं। फतेहपुर से (उत्तर प्रदेश) भाजपा की सांसद हैं।

विजय सांपला: पहली बार होशियारपुर (पंजाब) से सांसद चुने गए। 1990 में भाजपा से जुड़े।

अद्यतन केंद्रीय मंत्रिमंडल

प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी:		कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन, परमाणु ऊर्जा विभाग, अंतरिक्ष विभाग, सभी महत्वपूर्ण नीतिगत मुद्दे तथा किसी अन्य मंत्री को आवंटित न किए गए अन्य सभी मंत्रालय।
कैबिनेट मंत्री		
1	श्री राजनाथ सिंह	गृह
2	श्रीमती सुषमा स्वराज	विदेश, प्रवासी भारतीय मामले
3	श्री अरुण जेटली	वित्त, कारपोरेट मामले, सूचना एवं प्रसारण
4	श्री एम. वैंकैय्या नायडू	शहरी विकास, आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन, संसदीय कार्य।
5	श्री नितिन जयराम गडकरी	सड़क परिवहन एवं राजमार्ग, जहाजरानी।
6	श्री मनोहर पर्रिकर	रक्षा
7	श्री सुरेश प्रभु	रेल
8	श्री डी. वी. सदानंद गौड़ा	कानून एवं न्याय
9	सुश्री उमा भारती	जल संसाधन, नदी विकास तथा गंगा पुनरुद्धार
10	डॉ. नजमा ए. हेपतुल्ला	अल्पसंख्यक मामले
11	श्री राम विलास पासवान	उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण
12	श्री कलराज मिश्र	सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम
13	श्रीमती मेनका संजय गांधी	महिला एवं बाल विकास
14	श्री अनंतकुमार	रसायन एवं उर्वरक
15	श्री रवि शंकर प्रसाद	संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी
16	श्री जगत प्रकाश नड्डा	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण
17	श्री अशोक गजपति राजू पुसपति	नागरिक उड्डयन
18	श्री अनंत गीते	भारी उद्योग एवं लोक उद्यम
19	श्रीमती हरसिमरत कौर बादल	खाद्य प्रसंस्करण उद्योग
20	श्री नरेन्द्र सिंह तोमर	खान, इस्पात
21	श्री चौधरी बीरेन्द्र सिंह	ग्रामीण विकास, पंचायती राज, पेयजल और स्वच्छता
22	श्री जुएल उरांव	जनजातीय मामले
23	श्री राधा मोहन सिंह	कृषि
24	श्री थावर चन्द गेहलोत	सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता
25	श्रीमती स्मृति जुबिन ईरानी	मानव संसाधन विकास
26	डॉ. हर्ष वर्धन	विज्ञान और प्रौद्योगिकी, भू विज्ञान
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)		
1	जनरल वी. के. सिंह	सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन (स्वतंत्र प्रभार), विदेश मंत्रालय। प्रवासी भारतीय मामले।

2	श्री इन्द्रजीत सिंह राव	योजना (स्वतंत्र प्रभार), रक्षा।
3	श्री संतोष गंगवार	वस्त्र (स्वतंत्र प्रभार)
4	श्री बंडारू दत्तात्रेय	श्रम और रोजगार (स्वतंत्र प्रभार)
5	श्री राजीव प्रताप रूडी	कौशल विकास और उद्यमिता (स्वतंत्र प्रभार), संसदीय मामले।
6	श्री श्रीपद यसो नायक	आयुष (स्वतंत्र प्रभार), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण
7	श्री धर्मेन्द्र प्रधान	पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस (स्वतंत्र प्रभार)
8	श्री सर्बानन्द सोनवाल	युवा मामले और खेल (स्वतंत्र प्रभार)
9	श्री प्रकाश जावड़ेकर	पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन (स्वतंत्र प्रभार)
10	श्री पीयूष गोयल	विद्युत (स्वतंत्र प्रभार), कोयला (स्वतंत्र प्रभार), नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा (स्वतंत्र प्रभार)
11	डॉ. जितेन्द्र सिंह	पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन, परमाणु ऊर्जा विभाग, अंतरिक्ष विभाग।
12	श्रीमती निर्मला सीतारमण	वाणिज्य एवं उद्योग (स्वतंत्र प्रभार)
13	डॉ. महेश शर्मा	संस्कृति (स्वतंत्र प्रभार), पर्यटन (स्वतंत्र प्रभार), नागरिक उड्डयन

राज्य मंत्री

1	श्री मुख्तार अब्बास नकवी	अल्पसंख्यक मामले, संसदीय मामले
2	श्री राम कृपाल यादव	पेयजल और स्वच्छता
3	श्री हरिभाई पार्थीभाई चौधरी	गृह मंत्रालय
4	श्री सांवर लाल जाट	जल संसाधन, नदी विकास तथा गंगा पुनरुद्धार
5	श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरिया	कृषि
6	श्री गिरिराज सिंह	सूक्ष्म, लघु तथा मझौले उद्योग
7	श्री हंसराज गंगाराम अहीर	रसायन एवं उर्वरक
8	श्री जी.एम. सिद्देश्वरा	भारी उद्योग तथा सार्वजनिक उद्यम
9	श्री मनोज सिन्हा	रेल
10	श्री निहालचन्द	पंचायती राज
11	श्री उपेन्द्र कुशवाहा	मानव संसाधन विकास
12	श्री राधाकृष्णन पी.	सड़क परिवहन तथा राजमार्ग, जहाजरानी
13	श्री किरण रिजीजू	गृह
14	श्री कृष्ण पाल	सामाजिक न्याय तथा अधिकारिता
15	डॉ. संजीव कुमार बालियान	कृषि
16	श्री मनसुखभाई धनजीभाई वसावा	जनजातीय मामले
17	श्री रावसाहेब दादाराव दानवे	उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण
18	श्री विष्णु देव साय	खान, इस्पात
19	श्री सुदर्शन भगत	ग्रामीण विकास
20	प्रो. (डॉ.) राम शंकर कथेरिया	मानव संसाधन विकास
21	श्री वाई.एस. चौधरी	विज्ञान और प्रौद्योगिकी। भू विज्ञान
22	श्री जयंत सिन्हा	वित्त
23	कर्नल राज्यवर्द्धन सिंह राठौर	सूचना एंव प्रसारण
24	श्री बाबुल सुप्रिया (बाबुल सुप्रियो) बराल	शहरी विकास, आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन
25	साध्वी निरंजन ज्योति	खाद्य प्रसंस्करण उद्योग
26	श्री विजय सांपला	सामाजिक न्याय तथा अधिकारिता

एकात्म मानववाद

✍ पं. दीनदयाल उपाध्याय

एकात्म मानववाद भाजपा की मूल विचारधारा है। इस विचार को पं. दीनदयाल उपाध्याय ने 1965 में प्रस्तुत किया था। इस दृष्टि से अगले वर्ष इसके पचास वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस महत्वपूर्ण अवसर पर हम दीनदयालजी द्वारा प्रस्तुत विचार को 'एकात्म मानववाद' पुस्तक से यहां श्रृंखलाबद्ध पुनर्प्रकाशित कर रहे हैं-

आज स्वतन्त्रता प्राप्ति के 17 वर्ष उपरान्त भी भारत के सामने एक महत्वपूर्ण प्रश्न हुआ है कि सम्पूर्ण जीवन की रचनात्मक दृष्टि से कौन-सी दिशा ली जाय? इस सम्बन्ध में सामान्यतया लोग सोचने के लिए तैयार नहीं। वे तो तत्कालीन प्रश्नों का ही विचार करते हैं। कभी आर्थिक प्रश्नों को लेकर उनको सुलझाने का प्रयत्न होता है और कभी राजनैतिक अथवा सामाजिक प्रश्नों को सुलझाने के प्रयत्न किये जाते हैं। किन्तु मूलदिशा का पता न होने के कारण जितने प्रयत्न होते हैं, न तो उनमें पूरा उत्साह रहता है और न उनमें आनन्द का अनुभव होता है और न ही उनके द्वारा जैसी कुछ सफलता मिलनी चाहिए वैसी सफलता ही मिल पाती है।

आधुनिक बनाम पुरातन

देश की दिशा के सम्बन्ध में विचार करने वालों में दो प्रकार के लोग हैं। एक तो वे हैं जो कि भारत की हजारों वर्षो से चली आने वाली प्रगति की दिशा में, गुलाम होने पर जहाँ वह रुक गया, वहाँ से उसे आगे बढ़ाना चाहिए- यह विचार लेकर के चलते हैं। दूसरी ओर वे लोग हैं जो कि भारत की उसी पुरानी चीज को भिन्न-भिन्न कारणों से (काल के कारण से या मूलत: उस अवस्था को अयोग्य मानकर) उसके सम्बन्ध में विचार करने को तैयार नहीं। इसके विपरीत पश्चिम में जो आन्दोलन हुए, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में जो विचार सरणियाँ जन्मीं, उनको ही वे प्रगति की दिशा समझकर उन सम्पूर्ण विचारधाराओं और आन्दोलनों को भारत के ऊपर आरोपित करने का प्रयत्न करते हैं। भारत उन्हीं का किसी-न-किसी प्रकार से प्रतिबिम्ब बने, इसी विचार को लेकर वे चलते हैं। ये दोनों ही प्रकार के विचार सत्य नहीं है। किन्तु उनको पूर्णत: अमान्य करके भी चलना ठीक नहीं होगा। उनमें सत्यांश अवश्य है।

जो यह विचार करते हैं कि जहाँ हम रुक गये थे, वहाँ से लौट करके पुन: चलना आरम्भ करें, वे यह भूल जाते हैं कि लौटकर चलना वांछनीय हो या न हो, असम्भव अवश्य है, क्योंकि समय की गति को पीछे नहीं ले जाया जा सकता।

पुराना छूट नहीं सकता

हजारों वर्षो में जो कुछ हमने किया है, वह जबर्दस्ती ये हमें मिला हो या प्रेमपूर्वक हमने मिलाया हो, उसमें से सकते। साथ ही इस काल में हमने स्वयं भी कुछ न कुछ अपने जीवन में निर्माण किया है। जो नई परिस्थितियाँ पैदा हुई, जो नई चुनौतियाँ आई, उनमें हम सदैव वैरागी (Passive Agent) के रूप में निष्क्रिय होकर नहीं बैठे। बाहर वालों ने जो कुछ किया, हम केवल उसका प्रतिकार ही नहीं करते रहे, हमने भी परिस्थितियों के अनुसार अपने जीवन को ढालने का प्रयत्न किया। इसलिए उस सब जीवन को भुलाकर तो चल नहीं सकते।

विदेशी विचार सार्वलौकिक नहीं

इसी प्रकार जो लोग विदेशी जीवन तथा विचारों को भारत की प्रगति का आधार बनाकर चलना चाहते हैं, वे भी यह भूल जाते हैं कि ये विदशी विचार एक परिस्थिति-विशेष तथा प्रवृत्ति-विशेष की उपज हैं। ये सार्वलौकिक नहीं हैं। उन पर पश्चिमी देशों की राष्ट्रीयता, प्रकृति और संस्कृति की अमिट छाप है। साथ ही वहाँ के ये बहुत से विचार अब पुराने पड़ चुके हैं। कार्लमार्क्स का सिद्धान्त देश और काल दोनों ही दृष्टियों से इतना बदल चुका है कि आज हम मार्क्सवादी विश्लेषणों को तोते की तरह रट कर, आँख मूँदकर भारत पर लागू करें तो यह वैज्ञानिक अथवा विवेकपूर्ण दृष्टिकोण नहीं कहा जायेगा। यह रूढ़िवादिता होगी। जो अपने देश की रूढ़ियों को मिटाकर सुधार का दावा करें, वे विदेश की रूढ़ियों के गुलाम बन जाएं यह तो आश्चर्य का विषय है।

अपना देश : अपनी परिस्थितियों

प्रत्येक देश की अपनी विशेष ऐतिहासिक, सामाजिक

और आर्थिक परिस्थिति होती है, और उस समय उस देश के जो भी नेता और विचारक होते हैं, वे उस परिस्थिति में से देश को आगे बढ़ाने की दृष्टि से मार्ग निर्धारित करते हैं। अपनी समस्याओं के समाधान के लिए जो हल उन्होंने सुझाये, वे उसी प्रकार, भिन्न परिस्थितियों में रहने वाले समाज पर पूरी तरह लागू हो जाएं, यह विचार करना गलत है।

एक सामान्य उदाहरण लें। दुनिया भर के मनुष्यों के शरीर के अंगों की क्रिया समान होते हुए भी जो दवा इंग्लैण्ड में कारगर होती है वह भारत में भी उपयोगी सिद्ध होगी, यह निर्विवाद नहीं कहा जा सकता। रोगों का सम्बन्ध जलवायु, आचार-विचार, खान-पान तथा वंश-परम्परा सें रहता है। ऊपर से देखने पर रोग एक-सा नजर आने पर भी, उसकी दवा सब-मनुष्यों के लिए एक नहीं हो सकती। सब मर्जो और सब मनुष्यों के लिए एक ही दवा का नारा लगाने वाले (क्रैक्स) नीम-हकीम हो सकते हैं, चिकित्सक नहीं। इसलिए आयुर्वेद में सिद्धान्त बताया है कि 'उद्देशस्य यो जन्तुः तद्देशस्य तस्यौषधम्'। इसलिए बाहर की जितनी भी बातें है, उनको उनको हम उसी प्रकार से लेकर के अपने देश में चलें, यह तो सम्भव नहीं होगा और उसके द्वारा कभी अपनी प्रगति नहीं कर सकेंगे।

किन्तु दूसरी बात का विचार करना होगा कि ये जितनी भी बातें दुनिया में हुई हैं, ये सबकी सब ऐसी नहीं कि उनका सम्बन्ध देश विशेष के साथ ही हो। वहाँ भी मानव रहते हैं और मानव के चिन्तन और क्रियाओं में से जो चीज पैदा होती है, उसका बाकी मानवों के साथ भी कुछ न कुछ सम्बन्ध रह सकता है। इसलिए मानव ने ज्ञान से जो कुछ कमाया है उससे हम बिल्कुल आँख बन्द करके चलें, यह भी बुद्धिमत्ता की बात नहीं होगी। उसमें से सत्य को हमें स्वीकार करना और असत्य को छोड़ना पड़ेगा। सार का भी अपनी परिस्थिति के अनुसार परिष्कार करना होगा। संक्षेप में यह कह सकते हैं कि जहाँ तक शाश्वत सिद्धान्तों तथा स्थायी सत्यों का सम्बन्ध है हम सम्पूर्ण मानव के ज्ञान और उपलब्धियों का संकलित विचार करें। इन तत्वों में जो हमारा है उसे युगानुकूल और जो बाहर का है उसे देशानुकूल ढाल कर हम आगे चलने का विचार करें।

आदर्शों का संघर्ष

पश्चिम की राजनीति अभी तक राष्ट्रीयता, प्रजातन्त्र, समता या समाजवाद के आदर्शो को मानकर चली है। विश्व शान्ति के लिए भी बीच-बीच में प्रयत्न हुए हैं तथा विश्व एकता के आदर्श की कल्पना भी लोगों ने की है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के साधन के रूप में 'लीग ऑफ नेशन्स' तथा दूसरे युद्ध के बाद 'संयुक्त राष्ट्रसंघ' को जन्म दिया गया। विभिन्न कारणों से ये सफल नहीं हुए। फिर भी यह उस दिशा में प्रयत्न अवश्य हैं।

ये सभी आदर्श व्यवहार में अधूरे तथा विभिन्न समस्याओं को जन्म देने वाले सिद्ध हुए हैं। राष्ट्रीयता, दूसरे देशों की राष्ट्रीयता से टकराकर उनके लिए घातक बन जाती है तथा विश्वशान्ति को नष्ट करती है। साथ ही विश्वशान्ति को यदि यथास्थिति का पर्याय मान लिया जाय तो बहुत से राष्ट्र स्वतन्त्र हो ही नहीं पायेंगे।

विश्व की एकता और राष्ट्रीयता में भी टकराव आता है। कुछ लोग विश्व एकता के लिए राष्ट्रीयता को नष्ट करने की बात कहते हैं, तो दूसरे विश्व एकता को स्वप्न जगत की बात बताकर अपने राष्ट्र के स्वार्थों को ही सर्वाधिक महत्व देते हैं। दोनों का मेल कैसे बिठाया जाय, इस प्रकार की समस्या प्रजातन्त्र और समाजवाद के बीच उपस्थित होती हैं।

प्रजातन्त्र में व्यक्ति को स्वातन्त्र्य तो हैं परन्तु उसका विकास पूंजीवादी व्यवस्था के साथ शोषण और केन्द्रीयकरण के साधन के रूप में हुआ। शोषण मिटाने के लिए समाजवाद लाया गया। परन्तु उसने व्यक्ति की स्वतन्त्रता और गरिमा को ही नष्ट कर दिया। आज विश्व किकर्त्तव्यविमूढ़ है। उसे मार्ग नहीं दीख रहा कि वह कहां जाय। पश्चिम आज इस अवस्था में नहीं कि वह निर्विवाद रूप से आत्मविश्वासपूर्वक कह सके 'नान्यः पन्थः'। वे स्वयं मार्ग टटोल रहे हैं। अतः उनका अन्धानुकरण करना तो 'अन्धेन नीयमाना यथान्धाः' की ही शक्ति चरितार्थ होगी।

इस परिस्थिति में हमारी निगाह भारतीय संस्कृति की ओर जाती है। क्या यह विश्व की समस्या के समाधान में कुछ योगदान कर सकती है?

संस्कृति का विचार करें

राष्ट्रीय दृष्टि से तो हमें अपनी संस्कृति का विचार करना ही होगा, क्योंकि वह हमारी अपनी प्रकृति है। स्वराज्य का स्वसंस्कृति से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है। संस्कृति का विचार न रहा तो स्वराज्य की लड़ाई स्वार्थी, पदलोलुप लोगों की एक राजनीतिक लड़ाई मात्र रह जायेगी। स्वराज्य तभी साकार और सार्थक होगा जब वह अपनी संस्कृति की अभिव्यक्ति का साधन बन सकेगा। इस अभिव्यक्ति में हमारा विकास भी होगा और हमें आनन्द की अनुभूति भी होगी?

अत: आज राष्ट्रीय और मानवीय दृष्टियों से आवश्यक हो गया है कि हम भारतीय संस्कृति के तत्वों का विचार करें।

भारतीय संस्कृति-एकात्मवादी

भारतीय संस्कृति की पहली विशेषता यह है कि वह सम्पूर्ण जीवन का, सम्पूर्ण सृष्टि का, संकलित विचार करती है। उसका दृष्टिकोण एकात्मवादी अर्थात् Integrated है। टुकड़ों-टुकडों में विचार करना विशेषज्ञ की दृष्टि से ठीक हो सकता है, परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं। पश्चिम की समस्या का मुख्य कारण उनका जीवन के सम्बन्ध में टुकड़ों-टुकड़ा में विचार तथा फिर उन सबको थेगली लगाकर जोड़ने का प्रयत्न है।

हम यह तो स्वीकार करते हैं कि जीवन में अनेकता अथवा विविधता है, किन्तु उसके मूल में निहित एकता को खोज निकालने का हमने सदैव प्रयत्न किया है। यह प्रयत्न पूर्णत: वैज्ञानिक है। विज्ञानवेत्ता का प्रयत्न रहता है कि वह जगत् में दिखने वाली अव्यवस्था में से व्यवस्था ढूँढ निकाले, उसके नियमों का पता लगाए तथा तदनुसार व्यवहार के नियम बनाये। रसायनशास्त्रियों ने सम्पूर्ण भौतिक जगत में से कुछ आधारभूत तत्व (Element) ढूंढ़कर निकाले तथा बताया कि सभी वस्तुएँ उनसे ही बनी हैं। भौतिकी उससे भी आगे आ गई। उसने इन तत्वों के मूल में निहित शक्ति अर्थात् चेतना को ढूँढ़ निकाला। आज सम्पूर्ण जगत में चेतना भरा आविष्कार मात्र है।

दार्शनिक भी मूलत: वैज्ञानिक है। पश्चिम के दार्शनिक द्वैत तक पहुँचे। हीगेल ने 'थीसिस, एण्टीथीसिस तथा सिन्थेसिस' का सिद्धान्त रखा, जिसका आधार लेकर कार्लमार्क्स ने अपना इतिहास और अर्थशास्त्र का विश्लेषण प्रस्तुत किया।

डार्विन ने 'मात्स्य न्याय' को जीवन का आधार माना। किन्तु हमने सम्पूर्ण जीवन में मूलभूत एकता का दर्शन किया। जो द्वैतवादी रहे, उन्होंने भी प्रकृति और पुरुष को एक दूसरे का विरोधी अथवा परस्पर संघर्षशील न मानकर पूरक ही माना है। जीवन की विविधता अन्तर्भूत एकता का आविष्कार है और इसलिए उनमें परस्परानुकूलता तथा परस्पर पूरकता है। बीज की एकता ही पेड़ के मूल, तना, शाखाएँ, पत्ते, फूल और फल के विविध रूपों में प्रकट होती है। इन सबके रंग, रूप तथा कुछ-न-कुछ मात्रा में गुण में भी अन्तर होता है। फिर भी उनके बीज के साथ के एकत्व के सम्बन्ध को हम सहज ही पहचान सकते हैं।

परस्पर संघर्ष-विकृति का द्योतक

विविधता में एकता अथवा एकता का विविध रूपों में व्यक्तीकरण ही भारतीय संस्कृति का केन्द्रस्थ विचार है। यदि इस तथ्य को हमने हृदयंगम कर लिया तो फिर विभिन्न सत्ताओं के बीच संघर्ष नहीं रहेगा। यदि संघर्ष है तो वह प्रकृति का अथवा संस्कृति का द्योतक नहीं, विकृति का द्योतक है। अर्थात् जिस मात्स्य-न्याय या जीवन संघर्ष को पश्चिम के लोगों ने ढूंढ़कर निकाला, उसका ज्ञान हमारे दार्शनिकों को था।

मानव जीवन में काम, क्रोध आदि षड्विकारों को भी हमने स्वीकार किया है। किन्तु इन सब प्रवृत्तियों को अपनी संस्कृति अथवा शिष्ट व्यवहार का आधार नहीं बनाया। समाज में चोर और डाकू होते हैं। उनसे अपनी और समाज की रक्षा भी करनी चाहिए। किन्तु उनको हम अनुकरणीय अथवा मानव व्यवहार की आधारभूत प्रवृत्तियों का प्रतिनिधि मानकर नहीं चल सकते। 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' (Survival of the fittest) जंगल का कानून है। मानव की सभ्यता का विकास इस कानून को मानकर नहीं बल्कि यह कानून न चल पाये, इस व्यवस्था के कारण ही हुआ है। आगे भी यदि बढ़ना हो तो हमें इस इतिहास को ध्यान में रखकर ही चलना होगा।

सृष्टि में जैसे संघर्ष दिखता है वैसे ही सहयोग भी नजर आता है। वनस्पति और प्राणी दोनों एक दूसरे की आवश्यकता को पूरा करते हुए ही जिन्दा रहते हैं। हमें ऑक्सीजन वनस्पतियों से मिलती है तथा वनस्पतियों के लिए आवश्यक कार्बन-डाइऑक्साइड प्राणि-जगत् से प्राप्त होती है। इम परस्पर पूरकता के कारण ही संसार चल रहा है।

संसार में एकता का दर्शन कर, उसके विविध रूपों के बीच परस्पर पूरकता को पहचानकर, उनमें परस्परानुकूलता का विकास करना तथा उसका संस्कार करना ही संस्कृति है। प्रकृति को ध्येय की सिद्धि के अनुकूल बनाना संस्कृति तथा उसके प्रतिकूल बनाना विकृति है। संस्कृति प्रकृति की अवहेलना नहीं करती, उसकी ओर दुर्लक्ष्य नहीं करती, बल्कि प्रकृति में जो भाव सृष्टि की धारणा तथा उसको अधिक सुखमय एवं हितकर बनाने वाले हैं, उनको बढ़ावा देकर दूसरी प्रवृत्तियों को रोकना ही संस्कृति है।

एक छोटा-सा उदाहरण लें। भाई और भाई का सम्बन्ध, माता और पुत्र का सम्बन्ध, पिता और पुत्र का सम्बन्ध, बहन और भाई का सम्बन्ध, ये प्रकृति की देन हैं। ये सम्बन्ध जैसे मनुष्यों में होते हैं, वैसे पशुओं में भी होते हैं? जैसे एक माँ के दो बेटे भाई हैं, वैसे एक गाय के दो बछड़े भाई होंगे। परन्तु अन्तर कहाँ होता है? बेचारा पशु उस प्रकृति के सम्बन्ध को भूल जाता है। वह उसके आधार के ऊपर अपने बाकी

सम्बन्धों का निर्माण नहीं कर पाता। किन्तु मानव इस बात को याद रखता है और याद रख करके उसके आधार पर अपने जीवन के व्यवहार की दिशा निश्चित करता है। इस विचार से वह अपने पारस्परिक सम्बन्धों का निर्माण करने का प्रयत्न करता है। मानव मूल्यों तथा उसकी निष्ठाओं का निर्धारण इसी आधार पर होता है। अच्छे और बुरे के सम्बन्ध में उसकी जो धारणाएं निर्माण होती है वे इसी आधार पर निर्माण होती हैं। देखने को तो जीवन में भाई-भाई के बीच प्रेम और वैर दोनों ही मिलते हैं, किन्तु हम प्रेम को अच्छा मानते हैं। बन्धुभाव का विस्तार हमारा लक्ष्य रहता है। इसके विपरीत वैर अभीष्ट नहीं समझा जाता है। वैर को मानव व्यवहार का आधार बनाकर यदि इतिहास का विश्लेषण किया जाय और फिर उसमें एक आदर्श जीवन का स्वप्न देखा जाय, यह आश्चर्य की ही बात होगी।

माँ बच्चों का पालन-पोषण करती है। बच्चे के लिए माँ का प्रेम यह सबसे बड़ा समझा जाता है। इसको आधार बनाकर ही हम जीवन का निर्माण करने वाले व्यवहार के नियम बना सकते हैं। कहीं माँ के इस प्रेम के विपरीत भी अनुभव आता है। बिल्ली के बारे में ऐसा कहते हैं कि प्रसव के बाद उसे इतनी भूख लगती है कि वह अपने बच्चे को खा जाती है। किन्तु दूसरी ओर बंदरिया का बच्चा मर भी जाए, तो भी वह उसे चिपकाये लिये घूमती फिरती है। दोनों बातें देखने को मिलती हैं। अब प्रकृति के इन दो नियमों में से किस नियम को ढूंढ़कर हम जीवन का आधार बनाकर चलें? हमारा निर्णय तो यही होगा कि जो जीवन के लिए सहायक और पोषक है। उसे ही हम आधार बनाएं, इसके प्रतिकूल चलेंगे तो वह संस्कृति नहीं होगी।

नीतिशास्त्र के नियम

मनुष्य की प्रकृति में दोनों बातें हैं। मनुष्य की प्रकृति में क्रोध भी है, और लोभ भी है। मनुष्य की प्रकृति में मोह भी है और प्रेम भी है। मनुष्य की प्रकृति में त्याग भी है और तपस्या भी है। ये सब मनुष्य के जीवन में हैं। यदि हम काम, क्रोध, मोह और लोभ को आधार बनाकर के जीवन का विचार करें और कहें कि आखिर को तो सब लोग क्रोधी होते हैं, हर एक को क्रोध आता है, पशु को भी क्रोध आता है। इसलिए वही जीवन का मापदण्ड होना चाहिए। क्रोध को ठीक मानकर तथा लोगों को क्रोध की सलाह देकर यदि हम व्यवस्थायें बनायें तो वे चल नहीं पायेंगी। अत: सब जगह कहा है कि क्रोध मत करो। क्रोध आने के बाद भी मनुष्य क्रोध को रोक सकता है, उसका दमन कर सकता है और इसलिए हमें उसका दमन करना चाहिए। अत: 'दमन' हमारे जीवन का आधार हो सकता है, 'क्रोध' नहीं।

इस प्रकार के जीवन के जो नियम होते हैं, इन्हीं नियमों को 'नीति-शास्त्र के नियम' कहते हैं। ये नियम कोई तय नहीं करता। यानी क्रोध आने पर हमें क्रोध को प्रकट नहीं करना चाहिए बल्कि शान्त रहना चाहिए, क्रोध को पी जाना चाहिए- ऐसे जो नियम बनाए ये 'नीतिशास्त्र के नियम' हैं। अंग्रेजी में इन्हें इथिक्स (Ethics) कहते हैं। ये नियम किसी ने बनाए नहीं है, ये तो ढूँढ़े जाते हैं। जैसे यह नियम है कि यदि हम किसी पत्थर को फेंक दें तो वह नीचे गिर पड़ेगा। इसको 'गुरुत्वाकर्षण का नियम' कहते हैं। गुरुत्वाकर्षण का नियम न्यूटन ने बनाया नहीं है, उन्होंने इस नियम को ढूंढ़ा। उसी प्रकार से मानव-सम्बन्धों के भी कुछ नियम हैं। गुस्सा आए तो उस गुस्से को दबाओ, यह मानव के लाभ का होता है। नीतिशास्त्र के ये नियम ढूंढे हुए नियम हैं।

एक-दूसरे के साथ झूठ मत बोलो, जैसा देखा है वैसा बोलो-यह 'सत्य' है। इसका लाभ हमें हर घड़ी अनुभव में आता है। हमको जो जैसा हो वैसा ही बोले तो अच्छा लगता है। अगर हमने एक बात देखी और दूसरी बोली, हर जगह हम झूठ बोलते रहे तो हमको भी बुरा लगेगा। बोलने वाले को भी बुरा लगेगा और सुनने वाले को भी बुरा लगेगा। और जीवन तो चल ही नहीं पाएगा। बड़ी कठिनाई हो जाएगी।

सूरज निकला और हमने देखा कि सूरज निकला है। घर में किसी व्यक्ति ने पूछा कि सूरज निकल आया क्या? अब अगर हमने उसको झूठ बोल दिया कि नहीं निकला या बाहर वर्षा हो रही है और कमरे में बैठा हुआ व्यक्ति हमें पूछ रहा है कि बाहर वर्षा हो रही है या बादल साफ हैं? और हमने कहा कि हाँ, बादल बिल्कुल साफ हैं, वर्षा नहीं हो रही है। हमारी बात मानकर जब वह बाहर निकलता है तो एकदम भीग जाता है। इस स्थिति में सोचें कि हमारे उसके सम्बन्ध कैसे होंगे? इस प्रकार क्या जगत चल सकेगा?

यही नियम हमारे धर्म

यह सत्य का जो नियम है उसे ढूंढकर निकाला गया। इस प्रकार से ढूंढ करके निकाले हुए जो नियम हैं उनको ही हमारे यहाँ पर 'धर्म' कहा है। मानव जीवन को स्थिर रखने वाले, मानव जीवन की धारणा करने वाले- और मैं इस समय मानवता की बात कर रहा हूँ, बाकी चीजें छोड़ रहा हूँ। वैसे तो धर्म का सम्बन्ध सबके साथ आता है, सम्पूर्ण सृष्टि के साथ भी आएगा-जितने नियम हैं वे सब धर्म हैं। उस घर्म का आधार लेकर हम सम्पूर्ण जीवन का विचार करें।

क्रमश:

प्रधानमंत्री का विदेश प्रवास

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने म्यांमार, ऑस्ट्रेलिया और फिजी का नौ दिवसीय दौरा 11 नवंबर से 19 नवंबर तक किया। इस दौरान प्रधानमंत्री ने कई अंतरराष्ट्रीय शिखर बैठकों में भागीदारी की। काला धन से लेकर मेक इन इंडिया तक कई अहम मुद्दे उन्होंने उठाए। उनके भाषण की चर्चा देश-विदेश में हुई। ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री से लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति तक सभी ने श्री मोदी की शान में प्रशंसा के पुल बांधे। कुल मिलाकर उन्होंने अपनी विदेश यात्रा में सभी को मंत्रमुग्ध किया और काफी कुछ हासिल करने में सफल भी रहे। म्यांमार में प्रधानमंत्री ने वहां के राष्ट्रपति यू थीन सीन से मुलाकात की। भारत आसियान शिखर सम्मेलन में उद्घाटन वक्तव्य दिया। पी दौ में द्विपक्षीय वार्ताएं कीं। पी दौ में 12वें भारत-आसियान शिखर सम्मेलन को प्रधानमंत्री ने संबोधित किया। भारतीय राजदूत द्वारा आयोजित स्वागत समारोह में भारतीय समुदाय से मुलाकात की। ब्रिस्बेन में द्विपक्षीय बैठक में भाग लिया। म्यांमार में प्रवासी भारतीयों को संबोधित किया। वहीं, श्री नरेंद्र मोदी ने आस्ट्रेलिया के ब्रिसबेन में ब्रिक्स देशों के नेताओं की बैठक को संबोधित किया। वैश्विक आर्थिक लचीलापन लाने के बारे में जी-20 सत्र में हस्तक्षेप किया। जी-20 शिखर सम्मेलन में ऊर्जा पर प्रधानमंत्री ने वक्तव्य दिया। रोमा स्ट्रीट पार्कलैण्ड में महात्मा गाँधी की प्रतिमा के अनावरण हेतु हुए कार्यक्रम में भाषण दिया। क्वींसलैंड के प्रीमियर द्वारा आयोजित बिजनेस ब्रेकफास्ट के अवसर पर भाषण दिया। अल्फोरन्स एरीना, सिडनी में भारतीय समुदाय को संबोधित किया। समझौतों/सहमति पत्रों पर हस्ताक्षर किए। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच सुरक्षा सहयोग के लिए ढांचा तैयार हुआ। इसके पश्चात फिजी में राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ बातचीत की।

हम यहां श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए कुछ प्रमुख वक्तव्य प्रकाशित कर रहे हैं :

`लुक ईस्ट पॉलिसी' अब `एक्ट ईस्ट पॉलिसी' में तब्दील

भारत आसियान शिखर सम्मेलन में दिया गया उद्घाटन वक्तव्य

मुझे भारत-आसियान शिखर सम्मेलन में शिरकत करने पर बेहद प्रसन्नता हो रही है। खासतौर पर म्यांमार में यह अवसर मिलने से मैं खुद को सम्मानित महसूस कर रहा हूं। म्यांमार हमारा महत्वपूर्ण सहयोगी है और इसके साथ हमारे संबंध ऐतिहासिक रूप से बेहद मजबूत रहे हैं। भारत की पूरब की ओर यात्रा म्यांमार की पश्चिमी सीमा से शुरू होती है।

मेरी सरकार के पहले छह महीनों में हमने, पूरब के देशों के साथ संबंधों को बड़ी संजीदगी के साथ बढ़ावा दिया है। इससे हमारी सरकार की ओर से इस क्षेत्र को दी जा रही प्राथमिकता जाहिर होती है।

हमने आप सभी के साथ द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा दिया है। साथ ही हमने आसियान के साथ संबंधों को भी समान

महत्व दिया है। आज वैश्विक राजनीति और आर्थिक मामलों में आसियान की अपनी खास पहचान और महत्व है। आज समूचा एशिया-प्रशांत क्षेत्र एकीकरण और सहयोग के लिए बेताब है। इस बेहद महत्वपूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हम आसियान की ओर देख रहे हैं। आसियान से हमें न सिर्फ प्रेरणा मिलती है बल्कि नेतृत्व भी। अपने नेतृत्व में उस दिशा में हमें ले जाने में आपको शानदार सफलता मिली है।

आसियान समुदाय भारत का पड़ोसी है। आसियान के सदस्य देशों के साथ प्राचीन समय से ही हमारे व्यापारिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, कला और परम्परागत संबंध रहे हैं। हमने एक-दूसरे को आपसी आदान-प्रदान से लाभान्वित किया है। इसने आधुनिक रिश्तों का मजबूत आधार तैयार किया है। यही कारण है कि हमारे वैश्विक दृष्टिकोण में काफी समानता दिखाई देती है। हमारा आपसी विश्वास और भरोसा बेहद मजबूत है। हमारे संबंधों में कुछ भी तकलीफदेह नहीं है। हम समान नजरिए से दुनिया में उपलब्ध अवसरों और चुनौतियां को देखते हैं। आसियान और भारत के युवाओं में भारी जोश और उत्साह है तथा इनमें बुद्धिमता तथा प्राचीन सभ्यताओं की महती समझ है।

तेजी से विकसित हो रहे भारत और आसियान एक-दूसरे के महत्वपूर्ण सहयोगी हो सकते हैं। हम दोनों ही इस क्षेत्र में संतुलन, शान्ति और स्थायित्व बढ़ाने में और ज्यादा सहयोग करने को उत्सुक हैं। हम अपने सपनों को साकार करने में एक हद तक सफल रहे हैं। हमने मजबूत और व्यापक रणनीतिक साझेदारी की नींव रखी है। लेकिन हमारे बीच संबंधों में सहयोग की असीम संभावनाएं हैं।

भारत में आर्थिक विकास, औद्योगीकरण और व्यापार का एक नया युग प्रारंभ हो चुका है और परिणाम-स्वरूप भारत की 'लुक ईस्ट पॉलिसी' अब 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' में बदल चुकी है। हम भारत के साथ मित्रता बढ़ाने में आपके उत्साह का सम्मान करते हैं। आज विश्व और इस क्षेत्र को भारत और आसियान के बीच मजबूत साझेदारी की जरूरत है। इसी कारण हमारा विश्वास है कि भारत-आसियान भागीदारी की दिशा में हम अब एक नए युग में प्रवेश कर रहे हैं। मैं आपके विचारों से वाकिफ होने को उत्सुक हूं।

लेकिन अपनी बात समाप्त करने से पहले मैं भारत-आसियान संबंधों को मजबूत बनाने में मार्गदर्शन देने के लिए समन्वायक देश ब्रूनेई के महामहिम सुल्तान हसन-अल-बोलकिया को धन्यवाद देना चाहता हूं। मुझे विश्वास है कि अगले समन्वयक देश के रूप में वियतनाम इन संबंधों को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में अपना पूरा सहयोग देगा।

'व्यावसायिक संबंधों को मजबूत करने पर बल'

प्रधानमंत्री की ऑस्ट्रेलिया यात्रा के दौरान संयुक्त वक्तव्य

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जी-20 शिखर सम्मेलन के बाद ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री टोनी एबॉट के अतिथि के रूप में 16 से 18 नवम्बर 2014 तक ऑस्ट्रेलिया का आधिकारिक

दौरा किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री एबॉट के साथ कई विषयों पर चर्चा की, संसद के दोनों सदनों के संयुक्त सत्र को सम्बोधित किया और सीनेट के अध्यक्ष, सदन के स्पीकर और विपक्ष के नेता से कैनबरा में मुलाकात की। उन्होंने ब्रिस्बेसन, सिडनी और मेलबॉर्न का दौरा किया और राजनीतिक नेताओं, शिक्षाविदों, व्यावसायियों, खिलाड़ियों से मुलाकात की और ऑस्ट्रेलिया में भारतीय समुदाय के लोगों को सम्बोधित किया। प्रधानमंत्री ने अनुसंधान, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संस्थानों का दौरा किया। प्रधानमंत्री की यात्रा के दौरान कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए और नये कार्यक्रमों

की शुरुआत की गई।

पहली बार एक ही वर्ष में ऑस्ट्रेलिया और भारत के प्रधानमंत्रियों ने एक दूसरे देशों की यात्रा की जो यह दर्शाता है कि भारत और ऑस्ट्रेलिया की सामरिक भागीदारी और बढ़ रही है और यह दोनों देशों की समान रुचियों, साझा मूल्यों और लोकतांत्रिक संस्थाओं पर आधारित है।

प्रधानमंत्री एबॉट और प्रधानमंत्री मोदी ने महसूस किया कि दोनों देशों की भागीदारी में बढ़ोतरी की बहुत अधिक संभावनाएं हैं और दोनों देशों के बीच आर्थिक भागीदारी विशेषतौर पर प्राथमिक क्षेत्रों जैसे संसाधन, शिक्षा, कौशल विकास, कृषि, आधारभूत ढांचा, निवेश, वित्तीय सेवाओं और स्वास्थ्य में सहयोग बढ़ाने पर वे सहमत हुए हैं।

उन्होंने निर्देश दिया कि दोनों देशों के बीच व्यावसायिक सम्बंधों को और अधिक मजबूत करने के लिए निष्पक्ष, संतुलित परस्पर लाभदायक और उच्च गुणवत्ता वाले विस्तृत आर्थिक सहयोग समझौते पर वार्तालाप को शीघ्र पूरा किया जाए। इस सम्बंध में बातचीत का अगला दौर दिसंबर में होगा। दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने वस्तुओं और सेवाओं के लिए बेहतर बाजार पहुंच की आशा व्यक्त की। उन्होंने निवेश में वृद्धि पर संतोष व्यक्त करते हुए इस क्षेत्र में और अधिक प्रगति करने की महत्ता को पहचाना। ऑस्ट्रेलिया में संसाधन क्षेत्र में भारतीय निवेश से नौकरियों के सृजन और ऑस्ट्रेलिया की अर्थव्यवस्था में बढ़ोतरी होगी, वहीं भारत में कोल्ड स्टोरेज, ऊर्जा, आधारभूत ढांचे और अन्या क्षेत्रों में ऑस्ट्रेलिया से हुए निवेश से भारत को लाभ मिलेगा।

मजबूत व्यावसायिक सम्बंधों की महत्ता को स्वीकार करते हुए प्रधानमंत्री मोदी और प्रधानमंत्री एबॉट ने ऑस्ट्रेलिया-भारत सीईओ फोरम का पुनर्गठन किया है और नए सह अध्यक्षों की जल्द ही नियुक्ति की जाएगी। भारतीय सीईओ के एक प्रतिनिधिमंडल ने भी ऑस्ट्रेलिया का दौरा किया। जनवरी 2015 में भारत के कई शहरों में ऑस्ट्रेलिया कारोबारी सप्ताह का आयोजन किया जाएगा। भारत वर्ष 2015 में ऑस्ट्रेलिया में मेक इन इंडिया कार्यक्रम का आयोजन करेगा। इसके साथ ही भारत की विनिर्माण क्षमता का प्रदर्शन करने के लिए रत्नों और आभूषणों, इंजीनियरिंग और औषधियों से सम्बंधित प्रदर्शनी का आयोजन करेगा।

ऊर्जा आर्थिक भागीदारी का केन्द्र बिन्दु है। प्रधानमंत्री मोदी और प्रधानमंत्री एबॉट प्रमुख खनन निवेश परियोजनाओं को शीघ्र मंजूरी देने पर सहमत हुए हैं। उन्होंने स्वच्छ कोयले की प्रौद्योगिकी में सहयोग करने पर हामी भरी और ऑस्ट्रेलिया के संस्थानों और धनबाद स्थित इंडियन स्कूल ऑफ माइंस के बीच भागीदारी की संभावनाओं को तलाश करने का स्वागत किया है। दोनों देश सितम्बर में हस्ताक्षर किए गए असैन्य परमाणु समझौते को लागू करने के लिए प्रशासनिक प्रबंधों को शीघ्र पूरा करने की दिशा में तेजी लाने पर भी सहमत हुए। आने वाले वर्षों में ऑस्ट्रेलिया से यूरेनियम की आपूर्ति भारत की ऊर्जा सुरक्षा में वृद्धि करेगी।

भारत और ऑस्ट्रेलिया आतंकवाद और अन्य अंतरदेशीय अपराधों से निपटने के लिए कार्य करने के प्रति कटिबद्ध हैं। प्रधानमंत्री मोदी और प्रधानमंत्री एबॉट आतंकवाद से निपटने के लिए बने मौजूदा संयुक्तट कार्यबल का पुन:नामकरण करने पर सहमत हुए हैं ताकि इसमें अन्य अंतरदेशीय अपराध जिसमें अवैध अप्रवास पर चल रहा सहयोग भी सम्मिलित है को शामिल किया जा सके। दोनों प्रधानमंत्री सजा प्राप्त कैदियों को एक दूसरे देशों को सौंपने और नशीली दवाओं की समस्या से निपटने संबंधी सहमति पत्र पर हस्ताक्षर के अवसर पर उपस्थित थे। उन्हों ने सुरक्षा सहयोग की नई रूपरेखा तैयार किये जाने की बात को रेखांकित किया जिसमें रक्षा, आतंकवाद से मुकाबले, साइबर नीति, निश:स्त्रीकरण और

अप्रसार, समुद्री सुरक्षा क्षेत्रों में अधिक सहयोग सम्मिलित है। इस सुरक्षा रूपरेखा ने प्रदर्शित किया है कि दोनों देश आतंकवाद से निपटने और उसका खात्मा करने के लिए एकजुट हैं। इसमें जेहादी समूह में लड़ने के लिए शामिल होने वाले विदेशी आतंकवादी भी शामिल हैं।

प्रधानमंत्री मोदी और प्रधानमंत्री एबॉट रक्षा सहयोग को अनुसंधान, विकास और औद्योगिक भागीदारी के क्षेत्र में बढ़ाने पर सहमत हुए। इसके साथ ही रक्षा मंत्री स्तर पर नियमित बैठक, नियमित नौसेना अभ्यास और तीनों सेनाओं के बीच नियमित रूप से आधिकारिक बातचीत करने पर भी सहमति बनी।

दोनों प्रधानमंत्रियों ने ऑस्ट्रेलिया के युद्ध स्मारक पर साथ बिताए समय का स्मरण करते हुए साझा सैन्य इतिहास, जिसमें प्रथम विश्व युद्ध शताब्दी सम्मिलित है, को सहेजने पर सहमति व्यक्त की। दोनों नेताओं ने गलीपोली पर संयुक्त फिल्म निर्माण के लिए प्रसार भारती और एबीसी के बीच सहयोग का स्वागत किया।

भारत और ऑस्ट्रेलिया एक सुरक्षित और समृद्ध क्षेत्र बनाने के लिए मिलकर कार्य कर रहे हैं जिसमें प्रमुख क्षेत्रीय मंच जैसे पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन भी सम्मिलित है। दोनों देशों ने आसियान के साथ अपने जुड़ाव को रेखांकित करते हुए इंडियन ओसन रिम संघ को मजबूत करने और मजबूत मानवीय एवं आपदा राहत क्षमताओं को बढ़ाने, मलेरिया का मुकाबला और क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी द्वारा क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ाने के प्रति अपनी कटिबद्धता दोहराई।

दोनों देशों के लोगों के बीच सम्पर्क सम्बंधों में परिवर्तन ला रहा है। प्रधानमंत्री मोदी और प्रधानमंत्री एबॉट ने सामाजिक सुरक्षा समझौते पर हस्ताक्षर करने का स्वागत किया जिससे द्विपक्षीय आवाजाही बढ़ेगी और कारोबारी लागत कम होगी। उन्होंने आसान आवाजाही के लिए सुविधाओं को बढ़ाने का स्वागत किया और दोनों देशों के लिए महत्वपूर्ण पर्यटन क्षेत्र में एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर करने के अवसर पर साक्षी बने। भारत वर्ष 2015 में ऑस्ट्रेलिया में पर्यटन सप्ताह का आयोजन करेगा। दोनों देशों के फिल्म उद्योग में आपसी सहयोग बढ़ाने के उद्देश्य से श्रव्य-दृश्य सह उत्पादन समझौते पर बातचीत प्रगति पर है।

दोनों देशों के बीच शैक्षणिक सम्बंध गहरे और मजबूत हैं। दोनों प्रधानमंत्रियों ने अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के लिए ऑस्ट्रेलियाई और भारतीय विश्वविद्यालयों के बीच सहयोग और विशेष तौर पर संयुक्त पीएचडी कार्यक्रम का स्वागत किया। उन्होंने गंगा नदी के संरक्षण के लिए सहयोग की घोषणा की। उन्होंने जल भागीदारी के अंतर्गत नदी बेसिन योजना के क्षेत्र में सहयोग और द्विपक्षीय आदान-प्रदान और कृषि जल प्रबंधन के क्षेत्र में संयुक्त अनुसंधान के नये कार्यक्रम का स्वागत किया।

प्रधानमंत्री मोदी और प्रधानमंत्री एबॉट भारत की खेल क्षमताओं को बढ़ाने के प्रयास में एक-दूसरे का सहयोग करने पर सहमत हुए जिसमें निजी क्षेत्र भी सम्मिलित होगा। वे एक विश्व स्तरीय खेल विश्व विद्यालय की स्थापना में सहयोग करने पर भी सहमत हुए। उन्होंने कला और संस्कृति के क्षेत्र में एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किये जाने का स्वागत किया, जिससे दोनों देशों के बीच व्यापक सांस्कृतिक आदान-प्रदान की रूपरेखा तैयार होगी। भारत की सांस्कृतिक विविधता और गतिशीलता को दर्शाने के लिए वर्ष 2015 में ऑस्ट्रेलिया में भारत महोत्सव का आयोजन किया जाएगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री को उनकी सुविधा के अनुसार भारत भ्रमण का फिर से प्रस्ताव दिया। दोनों देश इस बात पर सहमत हुए कि उच्चस्तरीय यात्राओं ने दोनों देशों के बीच सामरिक भागीदारी बढ़ाने में महत्वपुर्ण भूमिका निभाई है।

`भारत फिर विश्वगुरु की भूमिका निभायेगा'

फिजी राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ विचार-विमर्श में प्रधानमंत्री के विचार

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि भारत मानव जाति के फायदे के लिए अपने लोकतंत्र और युवा जनसंख्या की

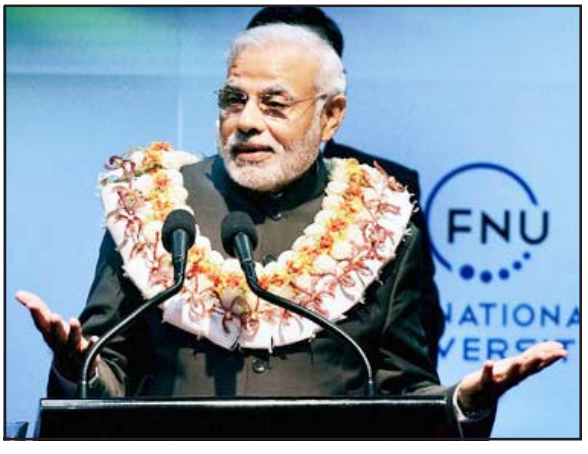

शक्ति का इस्तेमाल करेगा। उन्होंने कहा कि आने वाला युग ज्ञान का युग होगा और भारत एक बार फिर विश्वगुरू के रूप में अपनी भूमिका निभायेगा। 18 नवंबर को सूवा में फिजी राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ विचार-विमर्श में प्रधानमंत्री ने कहा कि समूचे विश्व के प्रति भारत की जिम्मेदारी है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और फिजी के बीच काफी मूल्य साझे हैं और यह दोनों देशों की जिम्मेदारी बनती है कि इन मूल्यों को समृद्ध बनाया जाए। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह हर्ष का विषय है कि फिजी ने आगे बढ़ने के लिए लोकतंत्र का रास्ता चुना है जोकि एक अतुलनीय उदाहरण है और इससे समूचे प्रशांत क्षेत्र को भी ऐसा ही करने की प्रेरणा मिलेगी।

प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि आने वाला युग ज्ञान और प्रौद्योगिकी का युग होगा। उन्होंने कहा कि ज्ञान के भंडार को निरंतर समृद्ध किये जाने की आवश्यकता है और इसे नई खोजों और अनुसंधान की गति के साथ सामयिक बनाना होगा। उन्होंने कहा कि भारत एक बार फिर विश्वगुरू की भूमिका निभाने को तैयार है। इसके अलावा वह मानव जाति के हित में काम करने को भी तत्पर है। प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारे पुरातन काल के ऋषियों ने भारत की वैश्विक जिम्मेदारी की बात की थी और उन्होंने ज्ञान युग की भी चर्चा की थी। अब उम्मीद है कि भारत अपने लोकतंत्र और भौगोलिक स्थिति

प्रधानमंत्री ने ब्रिसबेन में महात्मा गांधी की प्रतिमा का अनावरण किया

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 16 नवंबर को रोमा स्ट्रीट पार्कलैंडस, ब्रिसबेन में महात्मा गांधी की प्रतिमा का अनावरण किया। इस अवसर पर श्री मोदी ने इस कार्यक्रम के आयोजक श्री हेमन्त नायक का जिक्र करते हुए कहा कि जब वह (श्री मोदी) गुजरात के मुख्यमंत्री भी नहीं बने थे तभी से उनका सपना महात्मा गांधी की प्रतिमा का स्थापना रहा था। उन्होंने श्री नायक का लोगों में व्याप्त उस धारणा में बदलाव लाने के प्रति भी आभार व्यक्त किया कि प्रधानमंत्री बनने के बाद ही श्री मोदी, महात्मा गांधी का स्मरण करने लगे है। उन्होंने कहा कि उन्होंने यह कभी नहीं सोचा था कि इस प्रतिमा की स्थापना एक दिन वास्तविकता में बदल जाएगी अथवा इसका अनावरण करने का सौभाग्य उन्हें मिलेगा। उन्होंने इस क्षण को एक दैवी संदेश से कम नहीं माना है।

श्री मोदी ने कहा कि यह कोई साधारण नहीं बल्कि एक ऐतिहासिक युग की शुरूआत थी, जब 2 अक्टूबर, 1869 को महात्मा गांधी का जन्म हुआ था। गांधीजी आज भी पूरे विश्व के लिए प्रासंगिक हैं। श्री मोदी ने हाल ही में सम्पन्न हुए जी-20 शिखर सम्मेलन में उठाए गए मुद्दों जैसे वैश्विक तापमान में बढ़ोतरी और आतंकवाद का जिक्र करते हुए कहा कि गांधीजी का जीवन इन समस्याओं से निपटने का उत्तर देता है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि कई सदियों से मानव समुदाय की प्रवृति, प्रकृति का शोषण करने की रही है। महात्मा गांधी ने हमें हमेशा यह बताया था कि हमें ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं है। अगर उन्हें आधा गिलास पानी की आवश्यता होती तो वह कभी पूरा गिलास पानी स्वीकार नही करेंगे, और कागज को बचाने के लिए वह इस्तेमाल किए गए लिफाफे की दूसरी तरफ लिखेंगे। श्री मोदी ने कहा कि अगर पूरा विश्व महात्मा गांधी के उदाहरणों का अनुकरण करता है तो पर्यावरण के लिए काफी कुछ किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि महात्मा गांधी के लिए अहिंसा एक धर्म की तरह ही था और वह शाब्दिक हिंसा के खिलाफ भी थे। उन्होंने कहा कि अगर हम महात्मा गांधी के संदेशों को जीवन में आत्मसात करें और सभी का सम्मान करें तो पूरा विश्व अच्छा हो सकता है। इस अवसर पर क्वींसलैंड के गवर्नर पाल डी जर्सी और ब्रिसबेन के लॉर्ड मेयर काउंसलर ग्राहम किर्क भी उपस्थित थे।

प्रगाढ़ रिश्ते के लिए क्रिकेट का सहारा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सबसे अच्छी बात यह है कि वो मौके का सही इस्तेमाल करने में विश्वास करते हैं। ऑस्ट्रेलिया में क्रिकेट काफी लोकप्रिय है और भारत में तो इसको लेकर दीवानगी है, शायद इसी को देखते हुए श्री मोदी ने ऑस्ट्रेलिया से प्रगाढ़ रिश्ते के लिये क्रिकेट कूटनीति का सहारा लिया।

ऑस्ट्रेलिया के मशहूर मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) में ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री श्री टोनी एबॉट और भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी इस प्रतिष्ठित मैदान में मिले। इस मौके पर श्री मोदी ने कहा कि दोनों देशों के रिश्तों में एक नये सफर की शुरुआत हुई है।

इस समारोह में महान क्रिकेटर सुनील गावस्कर, कपिल देव, वीवीएस लक्ष्मण, एलन बॉर्डर और डीन जोंस समेत दोनों देशों की कई बड़ी-बड़ी क्रिकेट हस्तियां मौजूद थीं। इस दौरान मोदी ने ऑस्ट्रेलिया की खेल संस्कृति की भरपूर तारीफ की और शानदार मेजबानी के लिए अपने ऑस्ट्रेलियाई समकक्ष का आभार जताया। श्री एबॉट ने श्री मोदी के सम्मान में एमसीजी में एक स्वागत समारोह आयोजित किया था।

श्री मोदी ने 161 साल पुराने इस क्रिकेट मैदान पर अपने भाषण को यहां विशेषकर मैकग्रा और ब्रेट ली के खिलाफ एक शतक जमाने जैसा बताया और कहा, ये यादें हमेशा मेरे साथ रहेंगी। प्रधानमंत्री ने कहा, बहुत सारे भारतीय दिसंबर की सर्द सुबह को जल्दी उठकर टीवी पर इस शानदार स्टेडियम में हो रहा बॉक्सिंग डे टेस्ट देखते हैं। मुझे पता है कि भारत का इस मैदान पर प्रदर्शन बहुत अच्छा नहीं रहा है। लेकिन हमने 1985 में यहां चैंपियंस ट्रॉफी जीती थीं और गावस्कर और कपिल यहां पर हैं।

उन्होंने कहा, लक्ष्मण भी यहां हैं, जिन्हें ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बल्लेबाजी खास रास आती थी। श्री मोदी ने कहा कि यह मैदान 2015 के विश्व कप के फाइनल का उपयुक्त आयोजन स्थल है। प्रधानमंत्री ने फाइनल में भारत और ऑस्ट्रेलिया के आमने सामने होने की भी उम्मीद जतायी। श्री एबॉट द्वारा आयोजित रात्रिभोज से पहले श्री मोदी ने एक स्मृति चिह्न भेंट किया जिसमें राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के एक चरखे की प्रतिकृति के साथ क्रिकेट की तीन गेंदें बनी थीं जिनपर उनके और विश्व कप विजेता भारतीय कप्तानों कपिल देव और महेंद्र सिंह धौनी के हस्ताक्षर थे।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि भारत दूसरे क्षेत्रों में भी ऑस्ट्रेलिया के प्रसिद्ध खेल कौशल से सीख सकता है और दोनों देशों ने भारत में एक खेल विश्वविद्यालय को लेकर सहयोग करने का फैसला किया है।

का इस्तेमाल करते हुए महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगा। प्रधानमंत्री ने डिजिटल असमानता समाप्त करने की चर्चा करते हुए कहा कि हमें विश्व को मदद देने के लिए भविष्य की तैयारी करनी होगी।

प्रधानमंत्री ने कुछ ऐसी पहलों का उल्लेख किया जिनकी उन्होंने पहले घोषणा की थी :

- फिजी और अन्य प्रशांत क्षेत्र के द्वीप देशों के लिए आगमन पर वीजा
- फिजी में लघु व्यापार और गांवों में उद्यमों को बढ़ावा देने के लिए 50 लाख अमरीकी डॉलर का कोष
- विद्युत संयंत्र के उत्पादन के लिए 7 करोड़ अमरीकी डॉलर का ऋण
- फिजी के लिए भारत में छात्रवृत्तियों और प्रशिक्षण की सीटें दोगुना करना
- ग्लोबल वार्मिंग के मुद्दे पर प्रशांत द्वीप के देशों के लिए क्षमता निर्माण हेतु तकनीकी सहायता और प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए दस लाख अमरीकी डॉलर के विशेष कोष की शुरूआत। ■

झारखंड और जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनावों पर विशेष

जम्मू-कश्मीर की 87 और झारखंड की 81 सीटों पर पांच चरणों में विधानसभा चुनाव होने हैं। दोनों राज्यों में प्रथम चरण का मतदान 25 नवंबर को, दूसरे चरण का मतदान 2 दिसंबर को तो तीसरे चरण का मतदान 9 दिसंबर को होंगे। वहीं चौथे चरण का मतदान 14 दिसंबर को तो पांचवें चरण का मतदान 20 दिसंबर को होंगे। चुनाव परिणामों की घोषणा एक ही दिन 23 दिसंबर को की जाएगी। दोनों राज्यों में चुनाव-प्रचार जोरों पर है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह सहित अनेक वरिष्ठ पार्टी नेताओं ने कई चुनावी जनसभाओं को संबोधित किया। दोनों राज्यों में जनता परिवर्तन चाह रही है। झारखंड की खिचड़ी सरकारों और भ्रष्टाचार से जहां जनता ऊब चुकी है वहीं जम्मू-कश्मीर में वह परिवारवाद की राजनीति से मुक्ति पाना चाह रही है। दोनों राज्यों में गत लोकसभा चुनाव में भाजपा को मिली सफलता से पार्टी कार्यकर्ताओं का उत्साह चरम पर है, वहीं प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाले राजग शासन से देश में फैल रही विकास की किरणों से उम्मीद की लहर दौड़ रही है। हम यहां भाजपा नेताओं के भाषणों का संक्षिप्त समाचार प्रकाशित कर रहे हैं:

झारखंड के विकास के लिए परिवारवाद की राजनीति को खत्म करें : नरेंद्र मोदी

झारखंड विधानसभा चुनाव के लिए प्रचार अभियान की शुरुआत करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 21 नवंबर को डाल्टनगंज में आयोजित चुनावी रैली में लोगों से कहा कि झारखंड के विकास के लिए परिवारवाद की राजनीति को

खत्म कर भाजपा की सरकार बनाएं। श्री मोदी ने परिवारवाद पर निशाना साधते हुए कहा कि पहले भाई-भतीजावाद से मुक्त कराओ, झारखंड में जो शासन में बैठे हैं, वो भ्रष्टाचार करते हैं, उन्हें लाज-शर्म नहीं है। श्री मोदी ने कहा, मुझे झारखंड की सेवा करनी है, झारखंड को परिवारवाद से मुक्त कराना है। झारखंड से भ्रष्टाचार खत्म होगा, तभी विकास हो पाएगा।

श्री मोदी ने आगे कहा, यहां पांच नदियां हैं, फिर भी पीने का पानी नहीं है। हमें किसानों को जल्द से जल्द पानी देना है, राज्य के सीमेंट कारखाने बंद हैं। श्री मोदी ने कहा, हमने 60 साल में सारे खेल देखे, पर अब नहीं, अब विकास के लिए वोट देना है, बेरोजगारी खत्म कर तस्वीर बदलनी है।

श्री मोदी ने कहा, देश विकास की राह पर चल चुका है, अब झारखंड की तस्वीर बदलनी है। उन्होंने कहा, मैं आपको धन्यवाद देने आया हूं, आपने लोकसभा चुनाव में अभूतपूर्व जीत दिलाई। इस रैली में जहां तक मेरी नजर पहुंच रही है, माथे ही माथे हैं, हवा का रुख किधर है, यह साफ दिखता है। श्री मोदी ने कहा कि यह बिरसा मुंडा की धरती है, इस धरती के वीरों को प्रणाम करता हूं।

श्री मोदी ने सवाल किया, क्या कारण है कि झारखंड जमीन के मामले में अमीर है, लेकिन लोग गरीब हैं...क्योंकि शासकों ने सपनों को चूर-चूर कर दिया।

नरेंद्र मोदीजी विकसित राज्य बनाएंगे : रघुवर दास

पलामू में सभा को संबोधित करते हुए भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रघुवर दास ने नीलांबर पीतांबर की धरती पर राष्ट्रवाद, सुशासन व विकास के प्रति सजग रहने वाले भारत के प्रधानमंत्री का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि झारखंड को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी विकसित राज्य बनाएंगे। उनकी सोच है कि जिला व राज्य के विकसित होने के बाद ही देश का विकास होगा। फिर देश विश्व गुरु बन सकेगा। श्री दास ने कहा कि झारखंड में राजनीतिक अस्थिरता को अब दूर करना होगा, ताकि राज्य का संपूर्ण विकास हो सके।

कांग्रेस मुक्त बनाने के लिए आभार, एक बार फिर आह्वान: अर्जुन मुंडा

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अर्जुन मुंडा ने चियांकी

मैदान में विजय रैली को संबोधित करते हुए कहा कि इसी धरती पर नरेंद्र मोदी लोकसभा चुनाव से पहले आए थे और उन्होंने नारा दिया था कि देश को कांग्रेस मुक्त बनाने के लिए पलामू की जनता सहयोग करे। अब एक बार फिर श्री नरेंद्र मोदी पलामू की जनता का आभार जताते हुए दुबारा विधानसभा चुनाव में भी ऐसा ही करने का आह्वान कर रहे हैं। मुंडा ने कहा कि हमने 32 वर्षों के बाद राज्य में पंचायत चुनाव कराए। राज्य को डिजिटलाइज्ड बनाने के लिए काफी काम किया। लेकिन कई लोग ऐसे हैं जो बस राज्य को लूटने का काम कर रहे हैं।

बहुमत दें, झारखंड नंबर वन राज्य होगा : अमित शाह

भाजपा को झारखंड में दो तिहाई बहुमत दें हम खनिज संपदा से भरपूर इस प्रदेश को देश का नंबर वन राज्य बनाने का वादा करते हैं। यहां खनिज संपदा प्रचुर मात्रा में है साथ ही यहां के किसान-मजदूर भी काफी मेहनतकश हैं। झारखंड का एक समृद्ध प्रदेश रहते हुए भी यहां की जनता गरीब है। यह बातें भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 17 नवंबर को गढ़वा व नगर उंटारी में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र, गोवा, छत्तीसगढ़ तथा मध्यप्रदेश की तर्ज पर आप झारखंड में भाजपा की बहुमत की सरकार बनाएं। हम आपको सभी सुविधाओं से लैस झारखंड देने का काम करेंगे। कहा, झारखंड के कोयला खदान का पैसा पहले दिल्ली पहुंचता था। भाजपा की सरकार बनी तो कोयला खदान से प्राप्त होने वाले ढाई लाख करोड़ रुपये से झारखंड में ही विकास किया जाएगा।

सरकार बनी तो बदहाली दूर कर देंगे : राजनाथ सिंह

भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने भी 17 नवंबर को पांडू, पाटन, मनातू और कान्हाचट्टी में चुनावी सभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि अगर भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार बनी तो झारखंड में 14 साल से व्याप्त बदहाली को दूर कर देंगे। उन्होंने गरीबों के लिए शुरू की गई राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन, आवास योजना और प्रधानमंत्री जन-धन योजना की लचर हालत के लिए कांग्रेस समर्थित झामुमो की सरकार को जिम्मेदार ठहराया।

जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव

क्या जम्मू-कश्मीर पर दो परिवार ही करेंगे राज : नरेंद्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 22 नवंबर को किश्तवाड़ में एक जनसभा को संबोधित किया। श्री मोदी ने इस रैली में कहा, मुझे कश्मीर से बेहद लगाव है और कच्छ की तरह इसका विकास करूंगा। श्री मोदी ने कहा, मुझे अटल बिहारी वाजपेयी के सपने को पूरा करना है।

श्री मोदी ने विरोधी दलों पर निशाना साधते हुए कहा कि जम्मू-कश्मीर पर दो परिवारों का राज क्यों है? श्री मोदी ने कहा, एक परिवार यहां शासन करता है और पांच वर्षों तक इस राज्य को लूटता है, उसके बाद वह बदनाम हो जाता है। फिर राज्य को लूटने की शक्ति वह दूसरे परिवार को सौंप

देता है। दोनों के बीच राजनीतिक मैच फिक्सिंग का खेल चल रहा है।

श्री मोदी ने कहा, मैं आपसे अपील करता हूं कि वंशवादी शासन के इस जुए से आप खुद को मुक्त करें। उन्होंने लोगों को भारी संख्या में भारतीय जनता पार्टी को मतदान करने के लिए कहा, ताकि राज्य में भाजपा अपने बूते सरकार बना

सके।

श्री मोदी ने कहा कि जम्मू-कश्मीर की सरकार ने लोगों से पीने का पानी तक छीन लिया। जम्मू-कश्मीर के कई गांवों में आज भी टीवी तक नहीं है। जम्मू-कश्मीर से टूरिज्म खत्म हो गया है, लेकिन हम दुनिया को फिर से कश्मीर दिखाएंगे।

श्री मोदी ने कहा, मैं जम्मू-कश्मीर के लोगों के आंसू पोंछने आया हूं, वादियों में बिजली-पानी लाना है, कश्मीर को दुनिया का केंद्र बनाना है। श्री मोदी ने कहा, जम्मू-कश्मीर की वादियों में फिर से फिल्मों की शूटिंग कराऊंगा, जम्मू-कश्मीर के युवाओं के लिए वादियों में रोजगार पैदा करूंगा, यहां के युवाओं को डिजिटल और स्किल्ड बनाना है। जम्मू-कश्मीर से रिफ्यूजी की समस्या खत्म करना है।

जम्मू-कश्मीर में अभी नहीं तो कभी नहीं : अमित शाह

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने कहा है कि जम्मू कश्मीर में इस बार माहौल सरकार बनाने के अनुकूल है लेकिन इस सब के बावजूद कार्यकर्ताओं को जीतोड़ मेहनत भी करनी होगी। अभी नहीं तो कभी नहीं के सिद्धांत पर चलना होगा। गत 19 नवंबर को जम्मू के अशोका होटल में प्रचार अभियान के प्रभारियों के साथ हुई बैठक में श्री शाह ने मिशन 44 को पूरा करने के लिए पोलिंग बूथ पर काम करने पर बल दिया।

उन्होंने कहा कि इसमें कोई दो राय नहीं कि मोदीजी की लहर राज्य में है, लेकिन हमें जमीनी स्तर पर पोलिंग बूथ पर काम करना होगा, तभी मिशन 44 को आसानी से पूरा किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस चुनाव में जम्मू कश्मीर के लोग भाजपा को एक नई उम्मीद से देख रहे हैं। इसलिए इस उम्मीद को पूरा करने के लिए काम करना होगा।■

प्रधानमंत्री मोदीजी ने आडवाणीजी को दी जन्मदिन की बधाई!

कहा, हम सबने उनसे काफी कुछ सीखा है

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 8 नवंबर को भारत के पूर्व उपप्रधानमंत्री एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी को उनके 87वें जन्मदिन पर उनके नई दिल्ली स्थित निवास पर जाकर बधाई दिया।

श्री मोदी ने ट्विटर पर शुभकामना संदेश में लिखा, 'आडवाणीजी को उनके जन्मदिन की बधाई देता हूं। वह दीर्घायु हों और उनका स्वास्थ्य अच्छा रहे।' श्री मोदी ने लिखा, 'उनके अद्वितीय ज्ञान और दृष्टिकोण ने आडवाणी जी को सार्वजनिक जीवन में सबसे बड़ी हस्ती बनाया है। हम सभी ने उनसे काफी कुछ सीखा है।' उन्होंने लिखा कि बीजेपी को आज इस स्थान पर पहुंचाने में आडवाणी जी के दृढ़संकल्प और कठिन प्रयास का महत्वपूर्ण योगदान है। श्री आडवाणी का जन्म 8 नवंबर, 1927 को कराची में हुआ था।

कमल संदेश परिवार की ओर से श्री लालकृष्ण आडवाणीजी को जन्मदिन की हार्दिक बधाई! ■

गणतंत्र दिवस पर मुख्य अतिथि होंगे बराक ओबामा

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को आने वाले गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि बनने का न्यौता दिया, जिसे अमेरिकी नेता ने स्वीकार कर लिया है।

श्री मोदी ने इस संबंध में ट्वीट कर जानकारी है। श्री मोदी ने ट्वीट किया, 'इस गणतंत्र दिवस, हमें एक दोस्त के यहां होने की उम्मीद है..राष्ट्रपति ओबामा को मुख्य अतिथि के तौर पर समारोह की शोभा बढ़ाने का न्यौता दिया है।' यह पहला मौका होगा, जब अमेरिका का कोई राष्ट्रपति गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर शिरकत करेगा।■

मोदी सरकार की लगातार मेहनत आम आदमी के चेहरे पर ला रही है खुशी

✍ विकास आनन्द

जब छह महीने पूर्व भाजपा नेतृत्व वाली राजग सरकार सत्ता में आई तो सरकार के सामने लगातार बढ़ रही वस्तुओं की कीमतें तथा अर्थव्यवस्था की बदहाल स्थिति को सामान्य बनाना की एक बड़ी चुनौती थी। आम आदमी बढ़ती हुई महंगाई से परेशान था। कांग्रेस नीत संप्रग की गलत नीतियां और भ्रष्टाचार जनता को परेशान हालात में छोड़ रखा था। अर्थव्यवस्था का प्रत्येक क्षेत्र चाहे औद्योगिक उत्पादन हो या महंगाई नियंत्रण; सब संकट के दौर से गुजर रहा था। छह महीने के नरेन्द्र मोदी सरकार की कठिन मेहनत ने इस चीजों को नियंत्रित कर दिया है।

सितंबर में जारी आधिकारिक आंकड़े दर्शाते हैं कि मुद्रास्फीति पांच वर्षो के सबसे न्यूनतम स्थिति 5.5 प्रतिशत पहुंच गया है। पूर्ववर्ती सरकार के शासन के समय मुद्रास्फीति दो अंकों में पहुंच गया था। जब कांग्रेस नीत संप्रग सत्ता छोड़ रही थी तो औद्यागिक उत्पादन इस दशक का सबसे कम था। विनिर्माण क्षेत्र में निवेश कम हो गया था जिसके कारण रोजगार प्रभावित हो रहा था। आयात लघु मध्यम उद्योगों को प्रभावित कर रहा था। अभी 12 नवम्बर को केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार अक्तूबर में औद्योगिक उत्पादन 2.5 प्रतिशत तक बढ़ा है। इसी महीने में पिछले साल यह उत्पादन दर नकारात्मक -1.1 प्रतिशत था। पांच महीने की मोदी सकार की अच्छी नीति और कठिन मेहनत के बदौलत इस दर में 3.6 प्रतिशत का सकारात्मक परिवर्तन आया है। किसी भी अर्थव्यवस्था के लिये इस तरह के परिणाम अच्छा सूचक है।

सितंबर में जारी आधिकारिक आंकड़े दर्शाते हैं कि मुद्रास्फीति पांच वर्षों के सबसे न्यूनतम स्थिति 5.5 प्रतिशत पहुंच गया है। पूर्ववर्ती सरकार के शासन के समय मुद्रास्फीति दो अंकों में पहुंच गया था। जब कांग्रेस नीत संप्रग सत्ता छोड़ रही थी तो औद्यागिक उत्पादन इस दशक का सबसे कम था।

12 नवम्बर 2014 को केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा अलग आंकड़े जारी किए गए जिसके अनुसार खुदरा मुद्रास्फीति की पिछली तिमाही की अपेक्षा एक प्रतिशत कम हुआ है। पिछली तिमाही में यह 6.5 प्रतिशत था अब घटकर 5.5 प्रतिशत हो गया है।

लगातार गिर रही वस्तुओं और तेल की कीमतों के कारण इन आंकड़ों में सकारात्मक परिवर्तन आ रहा है। इसी साल के जनवरी में समग्र मुद्रास्फीति 8.79 प्रतिशत था। अब यह घटकर 5.5 प्रतिशत हो गया है। पिछली सरकार में तो खाद्य मुद्रास्फीति 14 प्रतिशत से भी अधिक हो गया था। अब यह 5.6 प्रतिशत तक आ गया है।

यह सब अर्थव्यवस्था में सारे सकारात्मक बदलाव वर्तमान सरकार द्वारा सही समय पर लिए गए सही निर्णय के कारण हो रहा है। उस सरकार ने अक्तूबर के अंतिम सप्ताह में पेट्रोल की कीमत 2.41 रुपए प्रति लीटर और डीजल 2.25 रुपए प्रति लीटर कम की। यह कीमत में कटौती अगस्त से छठी बार थी। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में इनकी कीमतें गिरने के साथ ही सरकार देश में भी कीमत कम करने का तुरंत निर्णय लेती है। पिछली संप्रग सरकार अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कीमत गिरने के साथ देश में भी कीमतों की कटौती करने का निर्णय विरले ही लेती थी।

बढ़ते खाद्य-मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए सरकार ने सराहनीय कदम उठाए। जैसे प्याज सहित फलों और सब्जीयों को 'एग्रीकल्चर प्राइम मार्केटिंग कमिट' (एपीएम) एक्ट से बाहर निकाला। सूची से बाहर निकलते ही यार्ड करों और स्थानीय शुल्कों से मुक्त हो गई। प्याज की न्यूनतम निर्यात की कीमत में 67 प्रतिशत का इजाफा कर दिया और जमाखोरी रोकने के लिए आवश्यक वस्तु अधिनियम के अंतर्गत प्याज तथा आलू को लाई। इससे राज्य सरकारों को जमाखोरी के खिलाफ कारवाई करने की शक्ति मिल जाती है। महंगाई को कम करने के लिए सरकार और भी दीर्घकालिक कदम उठाए जैसे सरकारी भंडारण ट्रांसपोर्टेशन आदि को बढ़ाना। जिसका असर आने वाले समय में दिखेगा।

हाल के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विदेश भ्रमण ने भारत के कद को विश्व में बढ़ाया है। दुनिया नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व को मजबूत और निर्णयकारी मानने लगी है। इस तरह भारत निवेश को आकर्षित करने में सफल हो रहा है। वर्तमान सरकार का 'मेक इन इंडिया' अभियान निवेशकर्ताओं में भारत के प्रति विश्वास को बढ़ा रहा है। 21 नवम्बर को जारी एक अधिकारिक आंकड़े के अनुसार विदेशी पॉर्टफोलियों विनिवेश 39.38 बिलियन डॉलर को छू लिया है। 2010 के बाद पहली बार इस तरह के आंकड़े तक पहुंचा है। ये सारी बातें मजबूत होती अर्थव्यवस्था को दर्शा रही है। ■

राज्यों की रिपोर्ट

पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल में पारूई गांव में एक और भाजपा कार्यकर्ता की हत्या : राहुल सिन्हा

बीरभूम जिले के पारूई पुलिस स्टेशन के गांवों में चल रहे भीषण संघर्ष ने 16 नवम्बर को सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस ने एक और भाजपा कार्यकर्ता को गोली का शिकार बना दिया।

20 वर्षीय एक किसान को चौमुण्डापुर गांव के तृणमूल कार्यकर्ताओं ने गोली मार कर हत्या कर दी, तथा दो अन्य पड़ोसी गांवों सिरसीता और जादबपुर में कम से कम दो व्यक्तियों को हताहत कर दिया तथा अनेक घरों को आग लगा दी और समझा जाता है कि खाकीधारी पुलिस ने गिरफ्तारी करने में सत्तापक्ष का साथ दिया।

तृणमूल गुण्डों ने यासीम शेख नामक किसान को धान के खेत में काम करते हुए गोलियों से मार गिराया। इन छापाधारियों ने काफी समय तक इधर-उधर घूमने के बाद पुलिस से बच कर फरार हो गए और पुलिस पीड़ित के पिता इकरामुल शेख को गिरफ्तार कर लिया जबकि वह बेचारा अपने बेटे शव के पास रो रहा था। लोगों का कहना है कि उसके पिता को जांच के नाम पर पुलिस स्टेशन में बुरी तरह पीटा गया। बाद में शेख को रिहा कर दिया गया।

पारूई ब्लॉक में पिछले एक महीने के आसपास मरने वालों की संख्या बढ़ कर पांच हो गई तथा इनमें से पहले ही मकरा गांव में भाजपा के चार कार्यकर्ता मारे जा चुके थे।

पिछले वर्ष पंचायत चुनावों के बाद से ही वहां तनाव भरा था, परन्तु जबसे तृणमूल नेता हृदयघोष के पिता सागर घोष को तृणमूल के गुण्डों ने गोली मार कर हत्या कर दी तब से तृणमूल अध्यक्ष अनुव्रत मण्डल ने एक पार्टी रैली में कहा कि विरोधियों को घरों को और पुलिस वाहनों को आग लगा दो। और यह स्थिति तब से और खराब हो गई जबसे सागर घोष ने अपने हजारों समर्थकों के साथ भाजपा में शामिल हो गए तथा तृणमूल कांग्रेस ने अपने पारूई ब्लॉक में खोए क्षेत्र में पैर जमाने के लिए प्रतिरोध करना शुरू कर दिया।

पश्चिम मिदनापुर जिले के घटक के सतोक गांव में पहले भी इक्का-दुक्का घटनाएं होती रही हैं। इससे पूर्व 16 नवम्बर को प्रातः तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने छह भाजपा समर्थकों को घायल कर दिया था।

भाजपाई हिंसा पर तीव्र प्रतिक्रिया जाहिर करते हुए भाजपा के अध्यक्ष श्री राहुल सिन्हा ने इस घटना की रिपोर्ट केन्द्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह को की है। श्री सिन्हा ने इस देश के सभ्य समाज से इस घटना पर उसी तरह से प्रतिवाद करने का आह्वान किया है, जिस तरह नंदीग्राम आंदोलन के समय किया गया था। उन्होंने कहा कि मैं हैरान हूं कि जिस प्रकार नंदीग्राम आंदोलन में हमारे साथ समाज ने जैसा प्रतिवाद किया था, वह आज नहीं हो पा रहा है। मैं चाहता हूं कि प्रत्येक ईमानदार व्यक्ति को हिंसा का प्रतिरोध करना चाहिए।

केन्द्रीय मंत्री श्री बाबुल सुप्रियो ने पुलिस द्वारा तृणमूल कार्यकर्ताओं का पक्ष लेने पर कहा कि सभी पुलिसकर्मी बेईमान नहीं है। लगता है कि उनमें से अधिकांश लोग सरकार के दबाव में आए हुए हैं।

मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश एक विकसित प्रदेश बन कर उभरेगा : शिवराज सिंह चौहान

16 नवम्बर को दतिया में एक सार्वजनिक सभा में श्री शिवराज सिंह चौहान ने सम्बोधित करते हुए कहा कि आने वाले वर्षों में मध्य प्रदेश देश के विकसित, समृद्ध और उन्नत राज्यों में से एक राज्य होगा। इस अवसर पर केन्द्रीय इस्पात मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने रैली को सम्बोधित करने से पूर्व दतिया के विख्यात पीताम्बर शक्तिपीठ में पूजा अर्चना की और मंदिर के सामने स्वच्छता अभियान में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इसके प्रति आम आदमी की चेतना को जागृत किया है। इससे निश्चित ही आम आदमी की मानसिकता बदलेगी और लोग स्वच्छता को अपनाने

लगेंगे।

श्री चौहान और श्री तोमर ने लोगों को श्री मोदी की केन्द्रीय सरकार की योजनाओं और कार्यक्रमों को बताते हुए कहा कि केन्द्र सरकार ने मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाने के लिए क्या कुछ किया है। जिन में दीर्घकालीन उपाए किए हैं, उनसे आने वाले वर्षों में बढ़ती कीमतों पर रोक लगेगी। केन्द्रीय सरकार के इन दीर्घकालीन उपायों के परिणामस्वरूप इनका असर नजर आने लगा है और कीमतें स्थिर होती जा रही हैं और महंगाई नीचे आ गई है। श्री चौहान ने कहा कि मध्य प्रदेश देश के विकसित नक्शे में उभरेगा और इसमें दतिया का अपना एक विशेष स्थान होगा।

कर्नाटक

कर्नाटक के चार मंत्री हटाए जाएं : प्रह्लाद जोशी

भारतीय जनता पार्टी बहुत समय से कांग्रेस सरकार के उन चार मंत्रियों को हटाने के लिए कह रही है, जो भ्रष्टाचार और अक्षमता में लिप्त बताए जाते हैं। भाजपा ने कहा कि है कि मुख्यमंत्री श्री सिद्धारमैय्या को 9 दिसम्बर से पहले हटा देना चाहिए जब बेलगावी में विधान सभा का शीतकालीन शुरू होने वाला है।

16 नवम्बर को मीडिया संवाददाताओं से बात करते हुए भाजपा अध्यक्ष और सांसद श्री प्रह्लाद जोशी ने अपनी इस मांग को दोहराया कि गृहमंत्री के.जे. जॉर्ज और तीन केबिनेट मंत्री एच एस महादेव प्रसाद, दिनेश गुंडुराव और कमारूल इस्लाम को त्यागपत्र देना चाहिए जिन पर ''अक्षमता और भ्रष्टाचार तथा अनियमितताओं के आरोप लगे हैं। यदि ये चार मंत्री बच निकले और समुचित कार्यवाही नहीं हुई तो भाजपा कार्यकर्ता मुख्यमंत्री पर दबाव डालने के लिए शीतकालीन सत्र के पहले दिन विरोध-प्रदर्शन करेंगे। कांग्रेस सरकार को हमारी मांग को हल्के से नहीं लेना चाहिए।

श्री जोशी ने महिलाओं और कन्याओं पर यौन शोषण के कारण राज्य की गिरती छवि पर भी चिंता व्यक्त की। राज्य में यौन शोषण से छुटकारा नहीं मिल पा रहा है, जिसके बारे में स्कूलों, सड़कों और अभी हाल में जेलों तक से रिपोर्ट मिल रही है।

स्पष्ट है कि आज कानून और व्यवस्था दांव पर है परन्तु श्री जॉर्ज को कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी का समर्थन मिलता जा रहा है। राज्य की बदनामी हो रही है कि यह बलात्कारों का राज्य बन गया है, अब तो यह बदनामी का विषय बन चुका है, परन्तु समाज में व्यवस्था बनाए जाने के लिए कुछ भी तो नहीं किया जा रहा है।

हिमाचल प्रदेश

हिमाचल से सेब-उत्पादकों का सड़क-निर्माण करने पर विरोध प्रदर्शन

हिमाचल प्रदेश में 16 नवम्बर को सात दिन की पदयात्रा का तीसरा दिन था, जिसे प्रदेशाध्यक्ष श्री सतपाल सत्ती और पूर्व बागबानी मंत्री एवं भाजपा उपाध्यक्ष श्री नरेन्द्र बरागटा ने रवाना किया था। यात्रा में लोग भारी संख्या में शामिल हुए। लोग, विशेष रूप से सेब उत्पादन किसान इसे फल-उत्पादकों का सड़क संघर्ष समिति का सत्याग्रह नाम से सम्बोधित कर रहे थे।

पर्वतीय राज्य के सेब-उत्पादक के क्षेत्र में रोहरू-हर्तकोटी-थ्योग में सड़क न बनाने के विरोध में प्रदर्शन किया जा रहा है। श्री बाराग्टा ने आंदोलन के नेतृत्व करते हुए रास्ते में अनेक स्थानों पर कार्यकर्ताओं को सम्बोधित किया।

16 नवम्बर को पदयात्रा रोहरू से रवाना हुई। इस अवसर पर एक सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस सरकार ने अपने पिछले कार्यकाल में केन्द्रीय वन और पर्यावरण से बिना अनुमति लिए और निजी भूमि-स्वामियों और गांव निकायों की अनुमति लिए बिना इस महत्वपूर्ण सड़क निर्माण के लिए वैश्विक निविदाएं आमंत्रित की थीं।

जब भाजपा सरकार ने 2007-12 में सभी वैध अनुमति प्रदत्त कर दी तो केन्द्र में यूपीए सरकार ने सड़क निर्माण करने वाली चीनी कम्पनी के अधिकारियों के वीजा का नवीकरण नहीं किया। ■